अर्क क्षत्रिय प्रकाश

पीडीएफ संस्करण

लेखक -
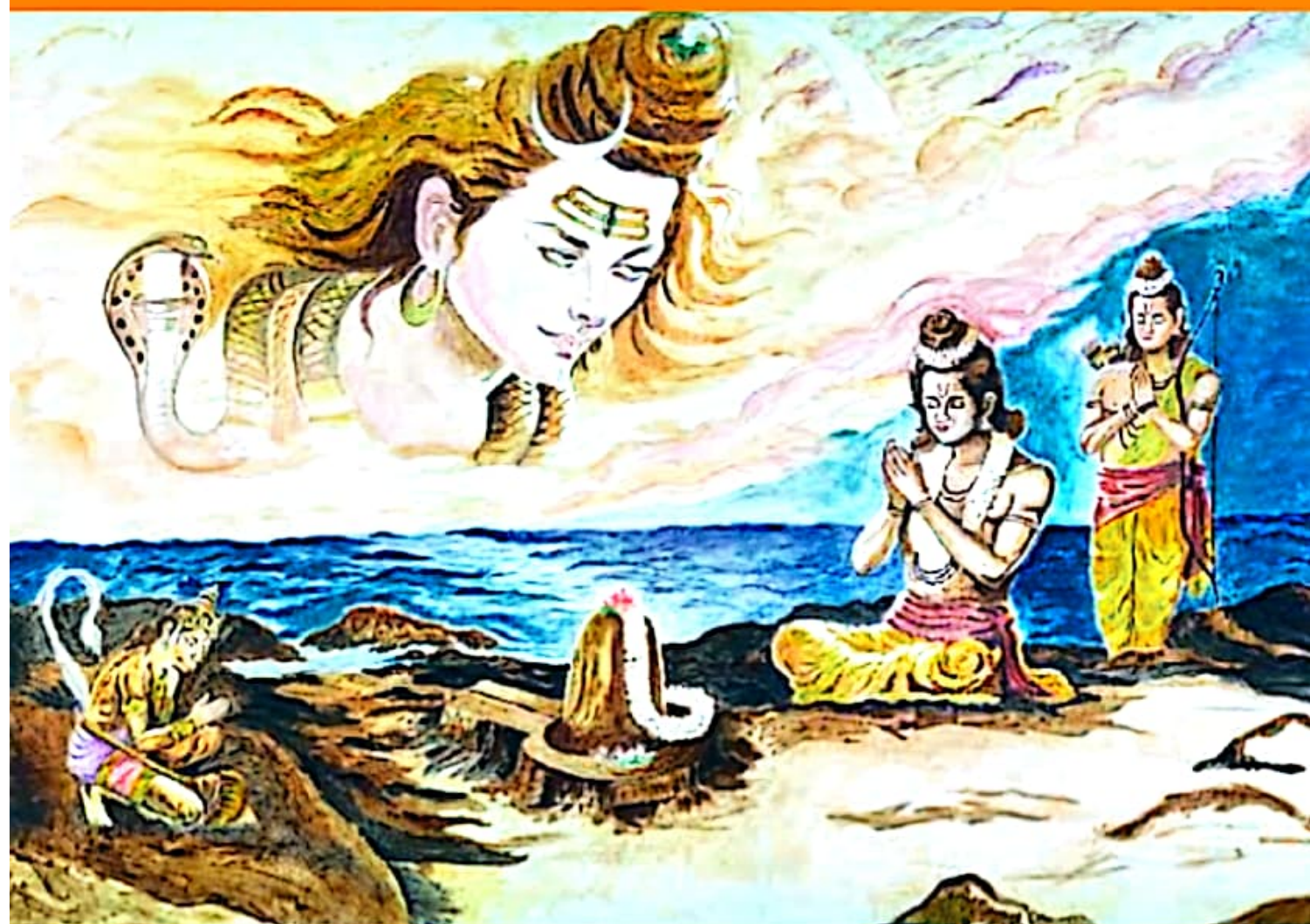
ठा. मोती सिंह इक्ष्वाकु 'इक्ष्वाक'

॥ श्रीः ॥

अर्क क्षत्रिय प्रकाश

लेखक -

ठा. मोती सिंह इक्ष्वाकु 'इक्ष्वाक'

प्रकाशन १९५९

पीडीएफ निर्माता

एस के सिंह सूर्यवंशी

संपर्क सूत्र

८१७६८०६८४१

प्राक्कथन

बंधुओ आज युग है अन्तर्राष्टीता और विश्व बंधुत्व का ऐसे में संकुचित जातियता की बात कहना, ठीक नहीं है लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना है कि परिवार से जाति और जाति से ही प्रान्त, देश और विश्व की ओर बढ़ा जाता है। आज समाज को ऐसे ही कमेटी तथा उत्साही नवयुवकों की आवश्यकता है जो जाति द्वारा समाज की सेवा करें क्यों कि मन्दिर में दिया जलाने से पहले घर का दिया जलाना आवश्यक है। कुछ उच्च जातियां कालचक्र के गर्द में पड़ अपना उच्च स्थान तोड़ चुकी हैं श्री अर्क वंशीय क्षत्रिय भी इसी कोटि में हैं लेकिन कुछ कर्मठ कर्मशील व्यक्तियों द्वारा आज उसका उत्थान हो रहा है। श्री मोतीसिंह जी भी एक ऐसे ही कर्मशील व्यक्ति हैं।

मुझे उनकी इस पुस्तक की पांडुलिपि पढ़ने का अवसर मिला। छोटे कलेवर की पुस्तक में लेखक ने गागर में सागर वाली कहावत चरितार्थ करदी है। इसके लिये लेखक वास्तव में बधाई का पात्र है। मुझे आशा है कि भविष्य में भी वे इसी प्रकार साहित्य सेवा के साथ साथ जाति सेवा भी करते रहेंगे। मैं एक बार फिर उन्हें बधाई देता हूँ उनके कार्य के लिये।

पं० रघुवीर शरण निर्मल

कीर्तन कलानिधि, कथावाचस्पति, मेरठ।

२६ जनवरी सन् १६५६

मेरे विचार

हर समाज को अपने इतिहास का ज्ञान होना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि जिस समाज को अपने इतिहास का बोध नहीं होता वह पतन की ओर अग्रसर रहता है इसलिए इतिहास का ज्ञान होना हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है
"अर्क क्षत्रिय प्रकाश" यह सिर्फ एक पुस्तक या पीडीएफ का ही नाम नहीं है यह नाम है हमारे क्षत्रिय समाज का हमारे पूर्वजों के बलिदान का जो एक पुस्तक के रूप में हम सभी के समक्ष प्रस्तुत हुई है इस पुस्तक को लिखने में न जाने कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा न जाने कितना संघर्ष करना पड़ा होगा इस पुस्तक के लेखक परम आदरणीय श्रद्धेय हमारे सूर्यवंश अर्क क्षत्रिय समाज के कुल गौरव ठा. श्री मोती सिंह इक्ष्वाकु जी जिनकी तपस्या का वरदान इस पुस्तक के स्वरूप में हम सभी को प्राप्त हुआ है वो आज भले ही हमारे बीच न हों लेकिन वो हमारे हृदय में सदैव निवास करेंगे उन्होंने जो बलिदान हमारे क्षत्रिय समाज के लिए दिया है जो मार्गदर्शन हमारे समाज के लिए किया है उसके लिए हमारा समाज सदैव ऋणी रहेगा उन्होंने जो प्रयास किया है हमारे समाज के लिए तो हम सभी का दायित्व बनता है उनके इस प्रयास को सफल बनाने में उनकी इस मुहीम को आगे बढ़ाए हमारे सर्व क्षत्रिय समाज तक अपने गौरवशाली इतिहास को पहुंचाए मैं एस.के. सिंह सूर्यवंशी कोटि कोटि नमन करता हूं हमारे महापुरुषों को जिनकी मुहीम का मैं एक छोटा सा हिस्सा बना हूं मैं इस गौरवशाली पुस्तक को एक पीडीएफ का स्वरूप देकर आप सभी तक पहुंचाने का प्रयास कर रहा हूं हमारे इस छोटे से प्रयास में आप सभी अपना योगदान दें हमारे समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक इस गौरवशाली इतिहास को पहुंचाए जिससे सभी को अपने इतिहास का ज्ञान प्राप्त हो सके बहुत बहुत धन्यवाद साभार

समाज का एक छोटा सा सेवक
एस.के. सिंह सूर्यवंशी
संडीला हरदोई उत्तर प्रदेश
संपर्क सूत्र : 8176806841
ईमेल : mrsksingh23@gmail.com

दो शब्द

नमो वेद विद्या नयों यज्ञरूपा ।
नमो सज्जनो पूर्ण भूपाल भूपा ॥
सकल जगत में अर्क बंश गाजे ।
बढ़े धर्म हिन्द सकल मंड़भाजे ॥

अर्क वंशओं यह वही पुस्तिक है जिस के लिये मुद्दतों लालचित थे और जिसकी हमारे अर्क वंशिओं को बढ़ी आवश्यकता है। इसमें शास्त्र पुराण महा भारत स्मृति आदि से सिद्ध किये हुए अर्क वंश की उत्पत्ती गोत्र प्रबल शाषा आदि वर्णन है। तथा कब से कब तक कहा राज रहा है इसका पूरा-पूरा वर्णन इस पुस्तक में है। तथा देश बिदेशो विद्वानों के रचे हुये ग्रन्थों से संग्रह कर प्रकाशित किया है।

जाति भाइयों एवं मित्रवरो को जिनके प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप ही हम यह अर्कक्षत्रियां प्रकाश के कार्य करने में समर्थ हो सके है, धन्यवाद देता हूँ। खेमकरन सिंह जो, श्री पुतुसिंह जी श्री स्व० रामरतनसिंह जी, श्री छैजूसिंह जी श्री भूलचन्दसिंह (पुत्र स्व० पाखईसिंह जी) १→बन्दी दीनसिंह २ धपसादीन ३-चिरन्जी सिंह ४—जियालालसिंह ५—शिवरतन सिंह ६—लछमनसिंह ७—गोपीसिंह आदि महानुभाव विशेष कर धन्यवाद के पात्र है जिन्होंने अपनी अमूल्य सम्मतियों से तथा निः स्वार्थ सेवा से हित का गौरव बढ़ाया है। इनके अतिरिक्त अर्क क्षत्रिये प्रकाश लिखने के अवसर पर अपना अत्यन्त सहयोग प्रदान करके हमारे कार्य को आगे बढ़ाने में उत्साहित किया है।

प्रिय पाठकों से निम्न निवेदन है कि अगर इस पुस्तक में कोई त्रुटिया रह गई हो तो सुधार लेने की कृपा करें इस के लिये आभारी हूँ।

(प्रस्तावना)

इस पत्र-पुष्प को पाठकों के सन्मुख प्रस्तुत करनेके पश्चात् मैं यह बता देना आवश्यक समझता हूं कि मुझे "अर्क क्षत्रिय प्रकाश" नामक पुस्तक बनाने की भावना कैसे उत्पन्न हुई प्रभू की कृपासे घर अथवा कर्यालय में मेरे सम्पर्क में रहने वाले लोग अच्छे, पढ़े लिखे तथा विद्यावान हैं। ऐसे ही कुछ आदरणीय विद्वान पुरुषों ने मुझे प्रेरणा दी और मुझे अपनी जाति की वर्तमान तथा समाजिक परिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त करने के लिये उत्साहित किया। मैंने अपनी जाति के ऊपर लिखी गई अनेक पुस्तकों का अध्ययान किया और महा भारत पुराण आदि से सिद्ध किये हुये अनेकों प्रमाणों सहित जो सामग्री उपलब्ध हुई उसी के अनुसार भूत, भविष्य, वतमान, परिस्थतियों पर प्रकाश डालते हुये मैंने इस पुस्तक को प्रकाशित करने का साहस किया और यह आशा करता हूँ कि पाठकगण अपनी पूर्वकाल की स्मृतियां को ध्यान में रखते हुये और उनके अनुसार अपनी कमियों को ध्यान में रखते हुये इस पुस्तक से कुछ लाभ उठायेंगे।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने से पूर्व मुझे अनेक विद्वानों की पुस्तकों का आश्रय लेना पड़ा है, उन में से कुछ के नाम इस इस प्रकार हैं।

१. श्री अर्क वांशी क्षत्रिय वंशावली।

२. अर्क क्षत्रिय का दौर—दौर।

३. जाति अन्वेषण।

४. महाभारत पुराण आदि।

इन महानुभाओं का मैं तन, मन से आभारी हूं तथा इन पर श्रद्धा विश्वास रखता हूँ। श्री मूलचन्द जी अर्क व स्वर्गीय श्री नत्थू लाल जी का नाम उल्लेखनीया हैं जिन्होंने ऐसी पुस्तक को प्रकाशित करा कर भूले हुये पथिकों को पथ प्रदर्शन कराया है इन महापुरुषों को मैं धन्यवाद देता हूं और उनके कार्य के लिये मैं बधाई देता हूं। स्वींगय नत्थू लाल जी को मैं श्रद्धाञ्जली अर्पित करता हूँ और यह शोक का विषय है कि अब हमारे मध्य में नहीं है।

लेखक-

मोती सिंह 'इक्ष्वाक'

(गायत्री का अर्थ चिन्तन)

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो योनः प्रचोदयात्।

ॐ:	ब्रह्म।
भूः	प्राणस्वरूप
भुवः	दुःखनाशक
स्वः	सुखस्वरूप
तत्ः	उस
सवितुः	तेजस्वी, प्रकाशवान्
वरेण्यः	श्रेष्ठ
भर्गो	पाप,नाशक
देवस्यः	दिव्य को, देने वाले को
धीमहिः	धारण करें
धियोः	बुद्धि
योः	जो
नः	हमारी
प्रचोदयातः	प्रेरित करे

गायत्री मन्त्र के इस अर्थ पर मनन एवं चिन्तन करने से अन्तः करण में उन तत्वों की वृद्धि होती है जो मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाते हैं। वह भाव बड़े ही शक्तिदायक, उत्साहप्रद, सतोगुणि, उन्नायक एवं आत्मबल बढ़ाने वाले हैं। इन भावों का नित्यप्रति कुछ समय मनन करना चाहिए।

गायत्री महाविज्ञान प्रथम भाग २६३ मनन के लिये कुछ संकल्प नीचे दिये जाते हैं। इन शब्दों को नेत्र बन्द करके मन ही

मन दुहराना चाहिए और कल्पना शक्ति की सहायता से इनका मानस चित्र मनः लोक में भली प्रकार अङ्कित करना चाहिये—

१—"भूः लोक, भुवः लोक, स्वः लोक तीनों लोकों में ओ३म परमात्मा समाया हुआ है। यह जितना भी विश्व ब्रह्माण्ड है, परमात्मा की साकार प्रतिमा है। कण-कण में भगवान समाये हुए हैं। इस सर्वव्यापक परमात्मा को सर्वत्र देखतेहुये मुझे कुविचारों और कुकर्मों से सदा दूर रहना चाहिये एवँ संसार की सुख शान्ति तथा शोभा बढ़ाने में सहयोग देकर प्रभु की सच्ची पूजा करनी चाहिये।"

२—"तत्—वह परमात्म, सवितुः- तेजस्वी, वरेण्य, श्रेष्ठ, भर्गोः—पाप रहित और देवस्य-दिव्य है। उसको मैं अन्तःकरण में धारण करता हूं। इन गुणों वाले भगवान मेरे अन्तःकरण में प्रतिष्ठता होकर मुझ में भी तेजस्वी, श्रेष्ठ, पाप रहित एवं दिव्य बनाते हैं। मैं प्रतिक्षण इन गुणों से युक्त होता जाता हूं। इन दोनों की मात्रा मेरे मस्तिष्क तथा शरीर के कण-कण में बढ़ती जाती है। मैं इन गुणों से ओत प्रोत होता जाता हूं।"

३—"यो—वह परमात्मा, नः—हमारी—धियो बुद्धि को, प्रचोदयात् सन्मार्ग में प्रेरित करे। हम सब को, हमारे स्वजन परिजनों की बुद्धि सन्मार्गगामी हो। संसार की सब से बड़ी विभूति, सुखों की आदि माता सद्बुद्धि को पाकर हम इस जीवन में ही स्वर्गीय आनन्द का उपभोग करें। मानव जन्म को सफल बनावें।"

उपरोक्त तीन चिन्तन संकल्प धीरे-धीरे मनन करने चाहिये। एक-एक शब्द कुछ क्षण रुकना चाहिये और उस शब्द का कल्पना चित्र मन में बनाना चाहिए।

गायत्री महाविज्ञान प्रथम भाग २६३/२६४

सूर्य के एक सौ आठ नाम

पुरोहित धौम्य ने धर्म तजा ? कहने का तात्पर्य यह है कि सूर्य की कृपा से अन्न उत्पन्न होता है—मैं तुम्हें सूर्य के एक सौ आठ नाम बतलाता हूं। सावधान होकर श्रवण करो—सूर्य, अर्यमा, भग त्वष्टा, पूषा, अर्क, सविता, रवि, गभस्तिमन्, अज, काल, मृत्यु, धाता, प्रभाकर, पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाशस्वरूप, सोम, बृहस्पति, शुक्र, बुध, मंगल, इन्द्र, विवस्वान, दीप्तांशु, शुचि, सौरि, शनैश्चर, ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र, स्कन्द, यम, वैद्युत, अग्नि, जाठराग्नि, ऐन्धन अग्नि, तेजस्वित, धर्मध्वज, वेदकर्ता, वेदङ्ग वेदवाहन, सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि, कला, काष्ट, प्रहृति, साम, दाम, क्षण, सम्वत्सरकर, अश्वत्थ कालचक्र, विभावसु, शाश्वत पुरुष, योगी, व्यक्त, अव्यक्त सनातन, कालाध्यक्ष, प्रजाध्यक्ष, विश्वकर्मा, तमोनुद, वरुता, सागर, अंश, जीमूत, जीवन, हरिहा, भूताश्रेय, भूतवर्ण सर्वलोकन-यस्कृत, स्यष्ट, सवर्तकवहि, सेवदि, अलोलुप, अनन्त, कपिलमान, कामद, सर्वतोमुख शय, विसाल, वरद, सर्वधातुनिर्पोचित, मन्, सर्पण, भूतादि, शीघ्रग, प्राणधारक, धनवन्तरि, धूमकेतु, आदिदेव, अदितिपुत्र, द्वादशात्मा, अरविन्दाक्षा, माता, पिता, पितामह, स्वर्गद्वार, प्रजाद्वार, मोक्षद्वार, त्रिविष्ण, देहकर्ता, प्रशान्तात्मा, विश्वतोमुख, चराचरात्मा, सूक्ष्मात्मा, मैत्रेय और करुणान्वित। धर्मराज ? बोधिसत्व अपित तेजस्वी एवं कीर्तिन भगवान् सूर्य के ये एक सौ आठ नाम हैं। स्वयं ब्रह्माजी ने इनका वर्णन किया है। इन नामों का उच्चारण करके भगवान् सूर्य को इस प्रकार नमस्कार करना चाहिये। समस्त देवता, पितर और यक्षजिन की सेवा करते हैं, असुर, राक्षस और सिद्ध जिनकी वन्दना करते हैं, तपाये हुये सोने और अग्नि के समान जिनकी कान्ती है उन भगवान भास्कर को मैं अपने हित के

लिये प्रणाम करता हूँ। जो मनुष्य सूर्योदय के समय एकाग्र होकर इसका पाठ करता है उसे स्त्री, पुत्र, धन रत्नों की राशि पूर्वजन्म का स्मरण धैर्य और श्रेष्ठ बुद्धि की प्राप्ती होती है। जो मनुष्य पवित्र होकर शुद्ध और एकाग्र मनसे भगवान सूर्य की इस स्तुति का पाठ करता है वह समस्त शोकों से मुक्त होकर अभीष्ट वस्तु प्राप्त करता है।

महा भारत कल्याण २३१—२३३

———

भजन

जब अधर्म हठ चढ़ा शीशपर, बढ़ा असुर अभिमानी।
घटा कर्म का भाव धरा पर; तापित संत अमानी॥
तब-तब नव अवतार ग्रहण कर तुमने दिया सहारा।
शोषित-पीड़ित मानवता को करके कृपा उबारा॥
नरक नित्य सखा नारायण! चक्र सुदर्शन धारी।
देव! तुम्हारे श्री चरणों में है वन्दना हमारी॥१॥
आशाओं के महल ढहे जब मिटे सभी मनसूबे।
महाप्रलय के बिन्दु सिन्धु में तीन लोक थे डूबे॥
तुमने ही तब अन्न बीज औषधियां सभी बचायी।
मानव के उस आदिपुरुष की नौका पार लगायी॥
जगके पालनहार! भारहर! महा मत्स्य अवतारी।
मोती कहै देव! तुम्हारे श्री चरणों में है वन्दना हमारी॥२॥

वन्दना

जै गणेश शुभ सुख करन विघ्न हरन सुख दाय।
अर्क वंश की नाव को दीजे पार लगाय॥
सूर सती माता तुमय सुमिरौ दो कर जोर।
देव ज्ञान बुद्धि बढ़े अज्ञानता हो दूर॥
व्यास देव भगवान के धरो चरण पर माथ।
ज्ञान सिकेज बुद्धि अब दीजिये जोड़ो दोनो हाथ॥
कहते मोतीसिंह हैं विने करूं करतार।
अर्क वशं की नाव को दीजे पार उतार॥

सुमरनी

सुर देव महेश दिनेश प्रभु सब को मैं माथ नवाता हूँ।
दीजिये ज्ञान इस सेवक को चरनों में शीश नवाता हूँ॥
ब्रह्म विष्णु शिव शंकर जी गुरू देव को शीश नवाऊं मैं।
अब ज्ञान दीजिये सेवक को जो अर्क वंश गुण गाऊं मैं॥
हनुमान चरणपद बन्दनकरिमुनि सन्तनको सिरनाताहूँ।
भूले चूके की क्षमा करें चर अचर को शीश नवाता हूँ॥
भारत माता के प्यारे सुत बाबा गाँधी को विने करूं।
दीजिये ज्ञान अर्क वंश को चरणों में शीश निवाऊ मैं॥
छोटी सी पुस्तक भगवान चरणों में अर्पण करता हूं।
अर्क वंश की वन्सावली मैं अर्पण करता हूं॥
शबरी के बेर समझ कर प्रभु चरणों में रखता हूं।
लीजिये इस "अर्क प्रकाश" को विन्ती यही करता हूं॥

"मोती सिंह"

रचना का आरम्भ

अब राजाओं का सम्पूर्ण बंश जिस के आदि ब्रह्मा जो है आप उसका यथावत् वर्णन। वत्स! प्रजापति ब्रह्मा जी को आदि बनाकर जिस की प्रवृति हुई है तथा जो सम्पूर्ण जगत् का मूल कारण हैं, उस राज बंश का तथा उसमें प्रकट हुये राजाओं का चरित्रों का बर्णन सुनोः—

जिस बंश में मनु इक्ष्वाकु, अनरण्य, भागीरथ तथा अन्य सैकड़ों राजा जिन्होंने पृथ्वी का पालन किया था, उत्पन्न हुए थे। ऐसे बंश का वर्णन सुनकर मनुष्य समस्त पापों से छुट जाता है। पुर्व काल में प्रजापति ब्रह्मा ने नाना प्रकार की प्रजा को उत्पन्न करने की इच्छा लेकर दाहिने अंगुठा से दक्ष को उत्पन्न किया और बायें अंगुठा से उनकी पत्नी को प्रकट किया। दक्ष के अदिति नाम की एक सुन्दरी कन्या उत्पन्न हुई, जिस के गर्भ से कश्यप ने भगवान सूर्य को जन्म दिया।

बन्धुओं—पहले सम्पूर्ण लोक प्रभा, और प्रकाश से रहित था। चारों ओर घोर अन्धेरा डाले हुए था। उस समय परम कारण स्वरूप एक अविनश्वी एवं वृहत् (अण्डा) कमल प्रकट हुआ। उसके भीतर सब के प्रपितामह, जगत के स्वामी, लोक श्रृष्टि, कमल योनी साक्षात् ब्रह्मा जी विराज मान थे। उन्होंने उस अण्डे का बेदन किया। बन्धुओ! उन ब्रह्मा जी के मुख से 'ॐ' यह महान शब्द प्रकट हुआ। उससे पहले भूः, फिर भुवः, तदनन्तर स्वः—ये तीन व्याहृतियाँ उत्पन्न हुई जो भगवान सूर्य (अर्क) का स्वरूप है 'ॐ' इस इस स्वरूप से सूर्य देव का अत्यन्त सूक्ष्म रूप प्रकट हुआ। उससे 'मह' यह स्थूल रूप हुआ फिर उससे 'जन' यह स्थूलतार रूप उत्पन्न हुआ। उससे 'तप' और तपसे 'सत्य' प्रकट हुआ। इस प्रकार ये सूर्य के सात स्वरूप स्थित हैं, जो कभी प्रकाशित होते हैं

और कभी अप्रकाशित रहते हैं। बन्धुओं वेदों में 'ओम' यह रूप बताया गया है। यह सृष्टि का आदि-अन्त अत्यन्त सूक्ष्म एवं निराकार है, वहीं पर ब्रह्म है तथा वही ब्रह्म का स्वरूप है।

बन्धुओं-तत्पश्चात् ब्रह्मा जी के दक्षिण मुख से यजुर्वेद के मंत्र अबधरूप से प्रकट हुआ। जैसा स्वर्ण का रंग होता है, वैसा ही उनका भी था। वे भी एक दूसरे से पृथक-पृथक थे। फिर परमेष्ठी ब्रह्मा के वह पश्चिम मुख से सामवेद के छन्द प्रकट हुए। सम्पूर्ण अर्थव वेद, जिसका रंग भवरा और कज्जलाराशि के समान काला है तथा जिसमें अभिचार कर्म के प्रयोग है। ब्रह्मा जी के उत्तर मुख से प्रकट हुआ। उसमें सुखमय सत्वगुण तमोगुण की प्रधानता है। व घोर और सौम्यरूप है। ऋग्वेद में रजोगुण की यजुर्वेद में सत्वगुण की सामवेद में तपोगुण की तथा अर्थववेद में तपोगुण एवं सत्वगुण की प्रधानता है ये चारों वेद अनुपम तेज से देदीप्यमान होकर पहले की ही भांति पृथक-पृथक स्थित हुये। तत्पश्चात् वह प्रथम तेज 'ॐ' के नाम से पुकारा जाता है, अपने स्वयंविम प्रकट हुये ऋग्वेदमय तेज को व्यप्त करके स्थित हुआ।

बन्धुओं-इसी प्रकार उस प्रवज्ञरूप तेज से यजुर्वेद एवं साम-वेद मय तेज को भी आवृत किया। इस प्रकार उस अधिष्ठान स्वरूप परम तेज ॐ कार में चारों वेदमय तेज एकत्व को प्राप्त हुए। इस प्रकार भगवान सूर्य (अर्क) वेदत्मा, वेद में स्थित, वेद विद्या स्वरूप तथा परम कहलाते हैं। वे सनातन देवता सूर्य (अर्क) ही रजोगुण और सत्वगुण आदि का आश्रय लेकर क्रमशः सृष्टि, पालन, और संहार के हेतु बनते हैं और इन कार्यों के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु, आदि का नाम धारण करते हैं। सूर्य (अर्क) का तत्व वेदों का प्रकटय, ब्रह्मा जी द्वारा सूर्य देव की स्तुति और सृष्टि रचना का आरम्भ। म० पु० पे० २४६-२४७ से लिया है।

चौदह मन्वन्तरों का वर्णन

अब समस्त मन्वन्तरों का विस्तार पूर्वक वर्णन सुनो:- अन्यथा समस्त मन्वन्तरों का विस्तृत वर्णन सौ वर्षों में भी नहीं हो सकता अतः संक्षेप से ही वेदों द्वारा आरम्भ होता है। प्रथम मनु-स्वायम्भुव मनु है, दूसरे मनु स्वारोचिष मनु, तीसरे मनु-उत्तम मनु, चौथे-तामास मनु पांचवां रैवत मनु, छठे-चाक्षुष मनु तथा सातवें वैवस्वत मनु, कहलाते हैं। वैवस्वत मनु ही वर्तमान कल्प के मनु है। इन के बाद सात मनु भविष्य में आने वाले मनुओं के नाम इस प्रकार से है। सावर्णि मनु, भौत्य मनु, रौच्य मनु तथा मेरूसावर्णेय नाम के मनु होंगे। ये भुत वर्तमान और भविष्य के सब मिला कर चौदह मनु हैं। मैंने जैसा लेख पाया है उससे अनुसार सब मनुओं के नाम बताये हैं। अब इनके समय में होने वाले ऋषियों मनु पुत्रों तथा देवताओं का वर्णन करता हूं।

(१) ब्रह्मा जी के पुत्र:-मरीचि, अत्रि, अङ्गिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्य वसिष्ठ, यह सात ब्रह्मा जी के पुत्र उत्तर दिशा में स्थित हैं, जो स्वायम्भुव मनु मन्वन्तर के सप्तर्षि हैं। स्वायम्भुव मनु के पुत्र:- आग्नीध्र अग्निबाहु, मेध्य, मेधातिथि, वसु, ज्योतिष्मान, द्युतिमान, हव्य, सबल, पुत्र, ये दस स्वायम्भव मनु के महाबली पुत्र थे। यह प्रथम मन्वन्तर हुआ।

(२) (दूसरा) मन्वन्तर इस प्रकार से।--स्वारोचिष मनु-प्राण, बृहस्पति, दत्तात्रेय; अत्रि, च्यवन, वायुप्रस्क्ते, महाव्रत, ये सात सप्तर्षि थे। तुषित नाम वाले देवता थे। और यह हविर्धि, सुकृति ज्योति जाप, पुति, प्रतित, नभस्य, नभ. ऊर्ज, ये महात्मा स्वरोचित मनु के पुत्र बताये गये हैं, जो महान् बलवान् और परकमी थे। यह द्वितिय मन्वन्तर का वर्णन हुआ।

(३) अब तीसरा मन्वन्तर बतलाया जाता है वसिष्ठ के सात पुत्र:-
वसिष्ठ तथा हिरण्यगर्भ के तेजस्वी पुत्र ऊँज-ये ही उत्तम मन्वन्तर के
ऋषि थे। इष, ऊँज, तनूर्ज, मधु,माधव, शुचि, शक्र, सह,नभस्य,तथा
ये उत्तम मनु के परक्रमी पुत्र थे। इस मन्वन्तर में भानु नाम
वाले देवता थे। इस प्रकार तीसरा मन्वन्तर बताया गया है।

(४) अब चौथे मनु का वर्णन करता हूँ:— काव्य, पृथु,
अग्नि, जह्नु, धाता, कपीवान् ,और अकपीवान् ये सात उस समयके
सप्तर्षि थे। सत्य नाम वाले देवता थे। द्युति तपस्या सुतपा, तपो-
सनातन, तपोस्ति, अकल्माष, तन्वी, धन्वी परंतप, ये दस तामस
मनु के पुत्र कहे गये हैं। यह चौथे मन्वतर का वर्णन हुआ।

(५) पांचवां रैवत मन्वन्तर है=उसमें देव बाहु, यदुध्र, वेदशिरा,
हिरण्यरोमा,पर्जन्य, सोमनन्दन,ऊर्ध्वबाहु तथा अत्रिकुमार सत्य-ये ये
सप्तर्षि थे। अभूतराज और प्रकृति नाम वाले देवता थे। धृतिमान
अव्यय, युक्त, तत्वदर्शी, निरुत्सुक, आरण्य, प्रकाश निर्मोहि, सत्यवाक्
कृति ये रैवत मनु के पुत्र थे। यह पांचवाँ मन्वन्तर बताया गया।

(६) अब छटे चाक्षुष मन्वन्तर का वर्णन करता हूं=उस में भृगु
विवस्वान् , सुधामा, विरजा, अतिनामा और सहिष्णु ये ही
सप्तर्षि थे। लेख नाम वाले पांच देवता थे नाड्वलेय नाम से प्रसिद्ध
आदि चाक्षुष मनु के दस पुत्र बतलाये गये है। यहां तक छटे
मन्वन्तर का वर्णन हुवा है

(७) अब सातवां वैवस्वत मन्वन्तर का वर्णन=अत्रि, वसिष्ठ,
कश्यप, गौतम, भरद्वाज, विश्वमित्र, तथा जमदग्नि-ये इस वर्तमान
मन्वन्तर में सप्तर्षि होकर प्रकाश में विराज मान है। साध्य,
विश्वेदेव, वसु, मरूद्गण, आदित्य, अश्विनी कुमार, ये इस
वर्तमान मन्वन्तर के देवता माने गये हैं। वैवस्वत मनु के इक्ष्वाकु,
नाभाग, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्ति, प्रांशु, आरिष्ट, करूष, प्रषध्न,
वां पुत्र सुधुम्न (इला) दस पुत्र हुए। ऊपर जिन महातेजस्वी के

नाम बताये गये हैं, उन्हीं के पुत्र और पौत्र आदि सम्पूर्ण दिशाओं में फैले हुए हैं। प्रत्येक मन्वन्तर में धर्म की व्यवस्था लोकरक्षा लिये जो सात सप्तर्षि रहते हैं, मन्वन्तर बीतने के बाद उनमें चार महर्षि अपना कार्य पूरा कर के रोग शोक से रहित ब्रह्मलोक चले जाते हैं तत्पश्चात् दूसरे चार तपस्वी आकर उन के स्थान की पूर्ति करते हैं। भूत और वर्तमान काल के सप्तर्षि गण इसी क्रम होते आये हैं।

सावर्णि मन्वन्तरमें होने वाले सप्तर्षि ये हैं।

परशुराम, व्यास, आत्रेय, भरद्वाज, कुल में उत्पन्न द्रोण कुमार अश्वत्थामा, गौतम वंशी, शरद्वन, कौशिक कुल में उत्पन्न गालव कश्यप नन्दन, और्वैरी, अध्वरीवान्, शमन, धृतिमान, वसु, आरिष्ट, अधृष्ट, वाजी, तथा सुमति ये भविष्य में सावर्णिक मनु के पुत्र होंगे। प्रातः काल उठकर इनका नाम लेने से मनुष्य सुखी यशस्वी तथा दीर्घायु होता है।

भविष्य में होने वाले अन्य मन्वन्तरों का संक्षेप से वर्णन किया जाता है, सावर्णी नाम के पांच मुन होगें, उन में से एक सूर्य (अर्क) के पुत्र हैं, और शेष चार प्रजापति के ये चारो मेरू गिरी के शिखर पर भारी तपस्या करने के कारण 'मेरू 'सावर्णी' के नाम से विख्यात होगें ये दक्ष के धेवते और प्रिय के पुत्र हैं। इन पांच मनुओं के अतिरिक्त भविष्य में रौच्य और भौत्य नाम के दो मनु और होगें। प्रजापति रुचि के पुत्र ही 'रौच्य' कहे गये हैं। रुचि के दूसरे पुत्र, जो भूति के गर्भ से उत्पन्न होगें 'भौत्य मनु' कहे जायेंगे। इस कल्प में होने वाले ये सात भावी मनु हैं। इन सब के द्वारा द्वीपों और नगरों सहित सम्पूर्ण पृथ्वी का एक सहस्र युगों तक पालन होगा। सत्य युग, त्रेता आदि चारों युग इकहत्तर बार बीत कर जब कुछ अधिक काल हो जाय, तब वह एक मन्वन्तर

कहलाता है। इस प्रकार ये चौदह मनु बतलाये गये। ये प्रजा की वृद्धि करने वाले हैं। समस्त वेदों और पुराणों में भी इन का प्रभुत्व वर्णित है। ये प्रजाओं के पालक हैं। इन के यश का कीर्तन श्रेयस्कार है। मन्वन्तरोंमें कितने ही संहार होते हैं और संहार के बाद कितनी ही सृष्टियां होती रहती हैं, इन सबका पूरा-पूरा वर्णन सैकड़ों वर्षों में नहीं हो सकता। मंवन्तरों के बाद जो संहार होता है, उसमें तपस्या, ब्रह्मचर्य और शास्त्र ज्ञान से सम्पन्न कुछ देवता और सप्तर्षि शेष रह जाते हैं। एक हजार चतुर्युग पूर्ण होने पर कल्प समाप्त हो जाता है। उस समय सूर्य (अर्क) की प्रचण्ड किरणों से समस्त प्राणी दग्ध हो जाता है। तब सब देवता अदित्यगणों के साथ ब्रह्मा जी को आगे करके सुरश्रेष्ठ भगवान् नारायण में लीन हो जाते हैं। वे अव्यक्त सनातनदेवता है। यह सम्पूर्ण जगत उन्हीं का है।

ब्रा० पु० पे० २८३

अदिति के गर्भ से भगवान सूर्य (अर्क) अवतार

बन्धुओं! इस जगत् की सृष्टि कर के ब्रह्मा जी ने पूर्व कल्पों के अनुसार वर्ण, आश्रम, समुद्र, पर्वत और द्वीपों का विभाग किया। देवता, दैत्य तथा सर्प आदि के रूप और स्थान भी पहले की ही भांति बनाये। ब्रह्मा जी के मारचि नाम से विख्यात जो पुत्र थे, उनके पुत्र कश्यप हुये। उनकी तेरह पत्नियां हुईं, वे सब की सब प्रजापति दक्ष की कन्यायें थीं। उनसे देवता, दैत्य और नाग आदि बहुत से पुत्र उत्पन्न हुये।

[१] अदिति ने = त्रिभुवन के स्वामी देवताओं को जन्म दिया।

[२] दिति ने = दैत्यों को जन्म दिया।

[३] दनु ने = महा परक्रमी एवं भयानक दानवों को उत्पन्न किया।

[४] विनता से=गरुड़ और अरुण-दो पुत्र हुये।
[५] खसा से=पुत्र यक्ष और राक्षस हुये।
[६] कद्रू से=नागों का जन्म हुआ।
[७] मुनि से=गन्धर्वों का जन्म हुआ।
[८] क्रोध से=कन्याएं
[९] अरिष्ठा से=अप्सराएं हुई।
[१०] इरा ने=ऐरावत आदि हाथियों को उत्पन्न किया।
[११] ताम्र के=गर्भ से श्येनो आदि कन्यायें पैदा हुई उन के पुत्र श्येन (बाज), मास और शुक आदि पक्षी हुये।
[१२] इला से=वृक्ष पैदा हुए।
[१३] प्रधा से=जल जन्तु उत्पन्न हुए।

कश्यप मुनि के अदिति के गर्भ से जो सन्तानें हुई, उनके पुत्र पौत्र, दौहित्र तथा उनके भी पुत्रों आदि से यह सारा संसार व्याप्त है। कश्यप के पुत्रों में देवता प्रधान है। इन में कुछ तो सात्विक हैं, कुछ राजस हैं और कुछ तामस है। ब्रह्मवक्ताओं ये श्रष्टे परमेष्ठी प्रजापति ब्रह्मा जी ने देवताओं को यज्ञ भाग का भोक्ता तथा त्रिभुवन का स्वामी बनाया; परन्तु उनके सौतेले भाई दैत्यों, दानवों और राक्षसों ने एक साथ मिलकर उन्हें कष्ट पहुंचाना आरम्भ कर दिया। इस कारण एक हजार दिव्य वर्षों तक उनमें बड़ा भयङ्कर युद्ध हुआ। अन्त में देवता पराजित हुये और बलवान् दैत्यों तथा दानवों को विजय प्राप्त हुई। अपने पुत्रों को दैत्यों और दानवों के द्वारा पराजित्त एवं त्रिभुवन के राजाधिकार से वञ्चित तथा उनका यज्ञ भाग छिन गया देख माता अदिति अत्यन्त शोक से पीड़ित हो गई। उन्होंने भगवान् सूर्य (अर्क) को अराधना के लिये महान यत्न आरम्भ किया। वे नियमित आहार करती हुई कठोर

नियमों का पालन और आकाश में स्थित तेजो राशि भगवान सूर्य (अर्क) का स्तवन करने लगी। माता अदिति बोलीं भगवान! आप अत्यन्त सूक्ष्म सुनहरी आयसि युक्त दिव्य शरीर धारण करते हैं। आपको नमस्कार है। आप तेजः स्वरूप, तेजस्वियों के ईश्वर, तेज के आधार एवं सनातन पुरुष हैं; आप जगत का उपकार करने के लिये जब अपनी किरणों से पृथ्वी का जल ग्रहण करते हैं, उस समय आपका जो तीव्र रूप प्रकट होता है, उसे मैं नमस्कार करती हूं। इस प्रकार देवी अदिति नियम पूर्वक रहकर दिन-रात सूर्य (अर्क) देव की स्तुति करने लगी। उनकी आराधना की इच्छा से वे प्रति दिन निराहार ही रहती थी। तदनन्तर बहुत समय व्यतीत होने पर भगवान् सूर्य (अर्क) ने दक्ष कन्या अदिति को आकाश में प्रत्यक्ष दर्शन दिया। अदिति ने देखा, आकाश से पृथ्वी तक तेज का एक महान् पुञ्ज स्थित है। उद्दीप्त ज्वालाओं के कारण उसकी ओर देखना कठिन हो रहा है उन्हें देख कर देवी अदिति को बड़ा भय हुआ। वे बोली-गोपते! आप मुझ पर प्रसन्न हों। मैं पहले आकाश में आपको जिस प्रकार देखती थी। वैसे आज नहीं देख पाती। इस समय यहाँ भूतल पर मुझे केवल तेज का समुदाय दिखाई दे रहा है। दिवाकार! मुझ पर कृपा कीजिये, जिससे आपके रूप का दर्शन कर सकूं। भक्त वत्सल प्रभो! मैं आपकी भक्त हूं, आप मेरे पुत्रों की रक्षा कीजिये। आप ही ब्रह्मा हो कर इस विश्व की सृष्टि करते हैं, आप ही पालन करने के लिये उद्यत होकर इसकी रक्षा करते हैं तथा अन्त में यह सब कुछ आप में ही लीन होता है। सम्पूर्ण लोक में आप के शिवा दूसरी कोई गति नहीं है। आप हैं ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, कुबेर, यम, वरुण, वायु, चन्द्रमा, अग्नि आकाश, पर्वत और समुद्र है। आपका तेज सबका आत्मा है। आपकी क्या स्तुति की जाये। यज्ञश्वर! प्रतिदिन अपने

कर्मयों लगे हुए ब्राह्मण भाति-भाँति के पदों से आपकी स्तुति करते हुए भजन करते है। जिन्होंने अपने चितको वश में कर लिया है, वे योग निष्ठा पुरुष योग मार्ग से आपका ही ध्यान करते हुए परम पद को प्राप्त होते हैं। कमल योनी ब्रह्मा के रूप में आप ही सृष्टि करते हैं। अच्युत (बिष्णु) नाम से आप ही पालन करते हैं। तथा कल्पान्त में रूद्र रूप धारण करके आप ही सम्पूर्ण जगत का संहार करते हैं।

तदनन्तर भगवान् सूर्य (अर्क) अपने उस तेज से प्रकट हुए। उस समय वे तपाये हुए तांबे के समान कान्तीमान् दिखायी देते थे। देवी अदिति उनका दर्शन करके चरणों में गिर पड़ी। तब भगवान् सूर्य (अर्क) ने कहा देवी! तुम्हारी जो इच्छा हो, वह वर मुझसे मांगलो। तब देवी अदित घुटने के वल से पृथ्वी पर बैठ गई और मस्तक नवाकर प्रणाम करके वरदायक भगवान सूर्य से बोली-देव। आप प्रसन्न हों। अधिक बलवान दैत्यों और दानवो ने मेरे पुत्रों के हाथ से त्रिभुवन का राज्य और यज्ञ भाग छीन लिया है गोपते ! उन्हे प्राप्त कराने के निमित्त आप मुझ पर कृपा करे आप अपने अंश से देवताओं के बन्धु होकर उनके शत्रुओं का नाश करे। प्रभो! आप ऐसी कृपा करें, जिससे मेरे पुत्र पुनः यज्ञ भाग के भोक्ता तथा त्रिभुवन के स्वामी हो जायें।

तब भगवान सूर्य (अर्क) ने अदिति से प्रसन्न होकर कहा-देवी! मैं अपने सहस्त्र अंशों सहित तुम्हारे गर्भ से अवतीर्ण होकर तुम्हारे पुत्र के शत्रुओं का नाश करूंगा। इतना कहकर भगवान सूर्य अन्तर्ध्यान हो गये और अदिति भी सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध हो जाने के कारण तपस्या से निवृत्त हो गयी। तदनन्तर सूर्य (अर्क) की सुषुम्ना नाम वाली किरण, जो सहस्त्र किरणों का समुदाय थी, देव माता अदिति के गर्भ से अवतीर्ण हुई। देव माता

अदिति एकाग्रचित हो कृच्छ और चन्द्रायण आदि व्रतों का पालन करने लगी और अत्यन्त पवित्रता पूर्वक उस गर्भ को धारण किये रही. यह देख महर्षि कश्यप ने कुछ कुपित होकर कहा-"तुम नित्य उपवास करके अपने गर्भ के बच्चे को क्यों मारे डालती हो यह सुनकर उसने कहा-" देखिये, यह रहा गर्भ का बच्चा; मैंने इसे मारा नहीं है, वह स्वयं ही अपने शत्रुओं को मारने वाला होगा।

ये कह कर देवी अदिति ने उस गर्भ को उदर से बाहर कर दिया। वह अपने तेज से प्रज्वलित हो रहा था। उदय कालीन सूर्य (अर्क) के समान तपस्वी उस गर्भ को देख कर कश्यप ने प्रणाम किया और आदि ऋचाओं के द्वारा आदर पूर्वक उसकी स्तुति की। उनके स्तुति करने पर शिशु रूप धारी सूर्य उस अण्डाकार गर्भ से प्रकट हो गये। उनके शरीर को कान्ती कमल पत्र के समान श्याम थी। वे अपने तेज से सम्पूर्ण दिशाओं का मुख उज्ज्वल कर रहे थे। तदनन्तर मुनिश्रेष्ठ कश्यप को सम्बोधित करके मेघ के समान गम्भीर वाणी में आकाश वाणी हुई-"मुने तुमने अदिति से कहा था कि अण्डे को क्यों मार रहो हो। उस समय तुमने "मारितअंडम्' का उच्चारण किया था। इस लिये तुम्हारे यह पुत्र 'मार्तण्ड' के नाम से विख्यात होगा और शक्ति-शाली होकर सूर्य के अधिकार का पालन करेगा, इतना ही नहीं, यह यज्ञ भाग का अपहरण करने वाले देव शत्रु असुरों का संहार भी करेगा।,

यह आकाश वाणी सुन कर देवताओं को बड़ा हर्ष हुआ और दानव बलहीन हो गये, फिर तो देवताओं का असुरो के साथ घोर संग्राम हुआ। उस युद्ध में भगवान सूर्य [अर्क] की क्रूर दृष्टि पड़ने तथा उनके तेज से दग्ध होने के कारण सब असुर जल

कर भस्म हो गये। अब तो देवताओं के हर्ष की सीमा न रही। उन्होंने तेज के उत्पत्ति स्थान भगवान सूर्य और अदिति का स्तवन किया। उन्हें पूर्ववत् अपने अधिकार और यज्ञ के भाग प्राप्त हो गये। सूर्य भी अपने अधिकार का पालन करने लगे। वे नीचे और ऊपर फैली हुई किरणों के कारण कदम्ब पुष्प के समान सुशोभित हो रहे थे उनका मण्डल गोलाकार अग्निपिण्ड के समान है तदनन्तर भगवान सूर्य को प्रसन्न करके प्रजापति विश्वकरमा ने विनय पूर्वक अपनी संज्ञा नाम की कन्या उनको ब्याह दी।

मा० पु० अ० ३२

अर्क क्षत्रियों का गोत्र

प्राचीन काल में गोत्र पुरोहितों के वंश के नाम से होता था क्योंकि उस वंश का कोई भी मनुष्य ब्राह्मणत्व कर्म करने से पुरोहित होता था परन्तु अब यह प्रथा लुप्त हो गई, हर पेशे करने वालों की पेशानुकूल जाति व्यवस्था रूढ़ हो गई, अतएवं साँसारिक नियम के अनुसार ईर्षा, द्वेष, खान, पान के भेद से न तो पूर्ववत पुरोहित ही रहे और न किसी वर्ण का पूर्ववत कर्म ही रहा इससे सब के गोत्र भी बदल गये इसके अतिरिक्त हर बंशो के नाम भी प्रभाव शाली पूर्वजो के नाम पर परिवर्तन होते रहे जैसे सूर्य्य बंशी के भेद शीशोदिया, राठौर गहलौत इत्यादि को कहीं २ चन्द्र बंशी नाग बंशी और अग्नि वंशी लिखा गया है, किन्तु अर्क जाति के पूर्वज राजा शाक्य कश्यप गोत्रियही थे कई स्थानों में लिखा भी है, 'गोत्रा भवंतु कश्यपम्' के अनुसार इस जाति का गोत्र वैवस्वत, इक्ष्वाकु, अर्क, गौतम, कश्यप पांच ही है। अर्क बंशी क्षत्रियों के श्री मत भागवत से और बाल्मीकी रामायण से और महा भारत कल्याण से निराधि करके स्वर्गीय पं० राधेश्याम शर्मा जी ने पांच गोत्र प्राप्त

किये हैं। इनका वेद सामवेद, उपवेद, गन्धर्ववेद, प्रवर कश्यप। शाखा कोथमी। सूत्र गोपिल शिखा बाम देवता। बिष्णु मानना चाहिये इनकी इष्ट देवी खड्ग धारी दुर्गा है, इस जाति में यज्ञोपवीत का अभाव है अस्तु अर्क जाति को वेदोक्त रीति से संस्कारादि कर्म क्षत्रिय धर्मानुसार करने चाहिये यह अपना धर्म है।

अर्क क्षत्रिय जाति के सामने महाभारत, बाल्मीकी रामायण क्षत्रिय बंश प्रदीप, अमर कोष, मनुस्मृती, भारत वर्ष का इतिहास आदि साम्राज्य के अन्त तक के टाड साहब के राज स्थान इतिहास तथा अर्क पथ प्रदर्शनी के आधार पर अनेक जिलों की सन्सेस रिपोर्ट, गजेटियर तथा मार्कण्डे पुराण, ब्रह्मपुराण, अवध के भूगोल तथा अपने ७ साल वर्ष के परिश्रम की खोज से मौलिक दन्त कथाओं व अर्क जाति के रश्म रिवाज तथा कुल पूर्वजों के नाम से अर्क जाति को सूर्य वंशी (अर्क) शाक्य क्षत्रिय होने का प्रमाण देकर वंशावली लिखता हूं।

अर्क क्षत्रिय प्रकाश (बंशावली)

बन्धुओ-अब मैं इस समय वर्तमान महा तेजस्वी वैवस्वतत मनु की सृष्टि तथा बंशावली का वर्णन करूंगा। महार्षि कश्यप से उनकी भावी दक्ष कन्या अदिति के गर्भ से विवस्वन् सूर्य (अर्क) का जन्म हुआ। विस्व कर्मा की पुत्री संज्ञा विवस्वान् की पत्नी हुई। उस के गर्भ से सूर्य ने तीन संताने उत्पन्न की, जिन में एक कन्या और दो पुत्र थे। सब से पहले प्रजापति श्रद्धदेव, जिन्है वैवस्वत मनु कहते हैं, उत्पन्न हुये। जिनके नाम ये हैं। श्रद्धदेव (वैवस्वत), यम, यमुना, तत्पश्चात यम और यमुना-ये जुड़वी संताने हुई। भगवान् सूर्य के तेजस्वी स्वरूप को देखकर सँज्ञा उसेसह न सकी। उसने अपने समान वर्ण वाली अपनी छाया प्रकट कीं। वह छाया संज्ञा (सवर्णा)

के नाम से विख्यात हुई। उसको भी संज्ञा ही समझकर सूर्य (अर्क) ने उसके गर्भ से अपने ही समान तेजस्वी पुत्र उत्पन्न किया। वह अपने बड़े भाई मनु के ही समान था। इस लिये सावर्ण मनु के नाम से प्रसिद्ध हुआ। छाया-संज्ञा से जो दूसरा पुत्र हुआ, उसकी शनिश्चर के नाम से प्रसिद्ध हुए। यम धर्म राज के पद पर प्रतिष्ठित हुए और उन्होंने समस्त प्रजा को धर्म से सन्तुष्ट किया। इस शुभ कर्म के कारण उन्हें पितरों का अधिपत्य और लोक पालक का पद प्राप्त हुआ। सवर्ण मनु प्रजापती हुए आने वाले सावर्णिक मन्वन्तर के वे ही स्वामी होंगे। वे आज भी मेरुगिरी के शिखर पर नित्य तपस्या करते हैं। उनके भाई शनिश्चर ने ग्रह की पदवी पायी।

ब्र० पु० २८४

वैवस्वत मनु का विवस्वन सूर्य से जन्म हुआ। उन्होंने अयोध्या पुरी बसाई है। सम्बत् १९९३ तक इन मनु की सृष्टी को १९७२९४०३७ वर्ष होते हैं। इनके समय के अट्ठाइसवी चौकड़ी के कलियुग अब बीत रहा है। और तैतिस चौकड़ी युग अभो और इनका समय चलेगा। वैवस्वत् मनु सूर्य के एक प्रतापी पुत्र थे। जो प्रजापती के समय कालींमान् और महान् ॠषि थे उन्होने बद्रीका-श्रम में जाकर एक पैर से खड़े हो दोनो बांहें ऊपर उठा कर दस हजार वर्ष तक बड़ा भारी तप किया। एक दिन की बात है वैवस्वत मनु चीरोणी नदी के तट पर तपस्या कर रहे थे। वहां उनके पास एक मत्स्य आकर बोला महात्मन् ? मैं एक छोटी सी मछली हूँ मूझे यहां अपने से बड़ी मछलियों से सदा भय बना रहता है। सोआप कृपा करके मेरी रक्षा करें। वैवस्वत मनु को इस मत्स्य की बात सुन कर बड़ी दया आई। उन्होंने उसे अपने हाथ पर उठा लिया और पानी से बाहर लाकर एक मटके में रख दिया। मनु का उस मत्स्य में पुत्र भाव हो गया था, उनकी अधिक देखभाल

के कारण वह उस मटके में बढ़ने और पुष्ट होने लगा कुछ ही समय में वह बढ़कर बहुत बड़ा हो गया ।

अतः मटकेमें उसका रहना कठिन हो गया एक दिन उसने मनु को देखकर कहा भगवान् ! अब आप मुझे इससे अच्छा कोई दूसरा स्थान दीजिये । तब वैवस्वत मनुने उसे मटके में से निकालकर एक बहुत बड़ी बावली में डाल दिया । वह बावली दो योजन लम्बी और एक योजन चौड़ी थी । वहां भी वह मत्स्य अनेकों वर्ष तक बढ़ता रहा और इतना बढ़ गया कि उसका विशाल शरीर उसमें भी नहीं रह सका । एक दिन उसने फिर मनु से कहा-भगवान् अब तो आप मुझे समुद्र की रानी गंगाजी के जल में डालदे वहाँ में आराम से रह सकूंगा, अथवा आप जहां ठीक समझे वहीं मुझे पहुंचा दे ।

मत्स्य के ऐसा कहने पर वैवस्वत मनु ने उसे गंगा जी के जल में ले जाकर छोड़ दिया । कुछ काल तक वहां रहने के पश्चात् वह और भी बढ़ गया । फिर उसने वैवस्वत मनु को देख कर कहा भगवान् अब तो बहुत बड़ा हो जाने के कारण मैं गंगा जी में भी हिल डुल नहीं सकता । आप मुझ पर कृपा करके अब समुद्र में ले चलो तब वैवस्वत मनु ने उसे गंगा जी के जल से निकाला और ले जाकर समुद्र के जल में डाल दिया । समुद्र में डालने पर उस महामत्स्य ने वैवस्वत मनु से हंस कर कहा तुमने मेरी हर तरह से रक्षा की है । अब इस अवसर पर जो कार्य उपस्थित है उसे मैं बताता हूं सुनो । थोड़े ही समय में इस चराचर जगत् का प्रलय होने वाला है । समस्त बिश्वके डूब जाने का समय आ गया अतः एक सुदृढ़ नाव तैयार कराओ, उस में बटी हुई मजबूत रस्सी बांध दो और सप्तर्षियों को साथ लेकर उस पर बैठ जावो सब प्रकार के अन्न और औषधियों के बीजों को अलग-अलग संग्रह कर के उन्हें सुरक्षित रूप से नाव पर रख लो और नाव पर

बैठे-बैठे ही मेरी प्रतीक्षा करो। समय पर मैं सींग वाली महा मत्स्य के रूप में आऊंगा इससे तुम मुझे पहचान लेना अब मैं जा रहा हूँ। उसे मत्स्य के कथनानुसार वैवस्वत मनु सब प्रकार के बीज लेकर नाव में बैठ गये और उत्ताल तरङ्गों से लहराते हुए समुद्र में तैरने लगें। उन्होंने उस महा मत्स्य का स्मरण किया। उनको चिन्तित जान कर वह श्रृङ्गधारी मत्स्य नौका के पास आ गये। वैव स्वत मनु ने उस रस्सी का फन्दा उस के सींग में डाल दिया। उससे बधकर वह मत्स्य उस नाव को बड़े वेग से समुद्र में खींचने लगा और नाव पर बैठे हुये लोगों को जल के ऊपर ही तैरता रहा। उस समय समुद्र में ऊंची-ऊंची लहरें उठ रही थीं पानी के वेग से उसमें गर्जना हो रही थी। प्रलय कालीन वायु के झोंकों से वह नाव डग मगा रही थी। उस समय न भूमि का पता चलता थो न दिशाओं का। भूवलोक और आकाश सब जल मय हो रहा था। केवल वैवस्वत मनु सप्तर्षि और वह मत्स्य यही दिखाई पड़ते थे। इस प्रकार वह महा मत्स्य बहुत वर्ष तक महा सागर में उस नाव को सावधानी से सब ओर खींचता रहा। उस के बाद वह उस नाव को खींच कर हिमालय की सब से ऊंची चोटी पर लेगये और उस पर बैठे हुये ऋषियों से हंस कर बोले हिमालय के इस शिखर में नौका को बाँध दो देरी न करो। यह सुनकर उन ऋषियों ने शीघ्र ही उस नाव को शिखर में बांध दिया। आज भी हिमालय का वह शिखर नौका बन्धन के नाम से विख्यात है। इस के बाद महा मत्स्य ने पुनः उनके हित की बात कही मैं भगवान् प्रजापति हूं। मुझ से परे दूसरी कोई वस्तु नहीं उपलब्ध होती मैंने ही मत्स्य रूप धारण कर तुम लोगों को इस संकट से बचाया है। अब वैव-स्वत मनु को चाहिये कि देवता असुर और मनुष्य आदि समस्त प्रजा की सब लोकों की और सम्पूर्ण चराचर की सृष्टि करें। उन्हें

जगत् की सृष्टि करने की प्रतिमा तपस्यों से प्राप्त होगी। और मेरी कृपा से प्रजा की सृष्टि करते समय उन्हें मोह नहीं होगा। यह कह कर वह महा मत्स्य अन्तर ध्यान हो गये। इस के बाद जब वैवस्यत मनु को सृष्टि करने की इच्छा हुई तो उन्होंने बहुत बड़ी तपस्या करके शक्ति प्राप्त की। उसके बाद सृष्टि आरम्भ की। फिर तो वे पहले कल्प के समान ही प्रजा उत्पन्न करने का आरम्भ किया।

महा भारत कल्याण पे० २६५-२६८

वेवस्वत मनु के वंश जों का वर्णन वेंवस्वत मनु के नौ पुत्र उन्ही के समान हुए, नाम इस प्रकार है। इच्वाकु, नाभाग, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त प्रांशु,अरिष्ट, करुष, पृषन्ध,एक समय की बात है प्रजपति वैंवस्वत पुत्र की इच्छा से मैत्रिवरूण यज्ञ कर रहे थे उस समय तक उन्हे कोई पुत्र नही हुआ था। उस यज्ञ में वैंवस्वत मनुने मित्रीवरूण के अंश की आहुति डाली। उसमें से दिव्य वस्त्र एवं दिव्य आभुषणो से विभुषित दिव्य रूप वाली इला नाम की कन्या उत्पन्न हुई महाराज वैंवस्वत मनु ने उस'इला' कह कर सम्बोधित किया और कहाँ कल्याणी ? तुम मेरे पास आओ। तक इला ने पुत्र की इच्छा रखने वाले प्रजापती वेंवस्वत से यह धर्म युक्त वचन कहा-'महाराज' में मित्रावरूण के अंश से उत्पन्न हुई हूँ, अतः पहले उन्ही के पास जाऊंगी। आप मेरे धर्म मे बाधा न डालिये। यो कह कर वह सुन्दरी कन्या मित्रावरूणी के समीप गयी और हाथ जोड़ कर बोली -'भगवान ? में आप दोनों के अंश से उत्पन्न हुई हूँ। आप लोगों की किस आज्ञा का पालन करूं ? मनु ने मुझे अपने पास बुलाया है।

मित्रावरूण बोले-सुन्दरी ? तुम्हारे इस धर्म, विनय, इन्द्रिय संयम और सत्यसे हमलोग प्रसन्न है महाभागे ! तुम हम दोनो की

कन्या के रूप में प्रसिद्ध होगी तथा तुम्ही वैवस्वत मनु के वंश का विस्तार करने वाला पुत्र हो जाओगी। उस समय तीनों लोको में सुधुम्न के नाम से तुम्हारी ख्याति होगी यह सुन कर वह पिता के समीप से लौट पड़ी। मार्ग में उस की बुध से भेंट हो गयी। बुध ने उसे मैथुन के लिये आमन्त्रित किया। उन के वीर्य से उसने पुरुरवा का जन्म दिया। तत्पश्चात् वह सुधुम्न के रूप में परिणत हो गयी। सुधुम्न के तीन बड़े धर्मात्मा पुत्र हुए उत्कल, गय, विनताश्व,

उत्कल-की राजधानी उत्कला (उडीसा) हुई।

[२] गय-पूर्वदिशा के राजा हुए। उनकी राजधानी गया क नाम से प्रसिद्ध हुई।

[३] विनताश्व-को पश्चिम दिशा का राज्य मिला।

जब वैवस्वत भगवान् सूर्य (अर्क) के तेज में प्रवेश करने लगे, तब उन्होने अपने राज्य को दस भागों में बांट दिया। सुधुम्न के बाद उन के पुत्रों में इक्ष्वाकु सब से बड़े थे,इसलिये उन्हे मध्य प्रदेश का राज्य मिला। सुधुम्न कन्या के रूप में उत्पन्न हुए थी, इसलिये उन्हे राज्य का भाग नही मिला। फिर वसिष्ठ जी के कहने से प्रतिष्ठान पुर में उनकी स्थिति हुई। प्रतिष्टान पुर का राज्य पाकर महा यशस्वी सुधुम्न ने उसे पुरुरवा को दे दिया। वैवस्वत कुमार सुधुम्न क्रमशः स्त्री और पुरुष दोनो के लक्षणों से युक्त हुए, इस लिये इला और सुधुम्न दोनो नामो से प्रसिद्ध हुई।

(१) नारिष्यन्त के पुत्र शक हुए।

(२) नाभाग के राजा अम्बरीष हुए।

(३) धृष्ट से धाष्टक नाम वाले क्षत्रियों की उत्पति हुई, जो युद्ध में उन्मत्त होकर लड़ते थे।

(४) करुष के पुत्र कारुष नाम से विख्यात हुए वे भी रणो-न्मत्त थे।

(५) धृष्टु के एक ही पुत्र थे, जो प्रजापति के नाम से प्रकट हुए।

(६) शर्याति के दो जुड़वी संतान हुई। उन में अनर्त नाम से प्रसिद्ध पुत्र तथा सुकन्या नाम वाली कन्या थी। यही सुकन्या महर्षि च्यवन की पत्नी हुई।

(७) अनर्त के पुत्र का नाम रैव था। उन्हे अनर्त देश का राज्य मिला। उनकी राजधानी कुशस्थली (द्वारका) हुई। रैव के पुत्र रैवत हुए जो बड़े धर्मात्मा थे। उनका दुसरा नाम ककुद्मी भी था। अपने पिता के ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण उन्हें कुशस्थली का राज्य मिला। एक बार वे अपनी कन्या को साथ ले ब्रह्माजी के पास गये और वहां गन्धर्वो के गीत सुनते हुए दो घड़ी ठहरे रहे इतने ही समय में मानवलोक में अनेक युग बीत गये। रैवत जब वहा से लौटे, तब अपनी राजधानी कुशस्थली में आये: परन्तु अब वहा यादवो का अधिकार हो गया था।

यदुवंशियों ने उसका नाम बदल कर द्वारवती रख दिया था। उस में बहुत से द्वार बने थे। वह पुरी बड़ी मनोहर दिखाई देती थी। भोज, वृष्णि और अन्धक बंश के वसुदेव आदि यादव उसकी रक्षा करते थे। रेवतने वहां का सब वृत्तान्त ठीक-ठीक जान कर अपनी रेवती नाम की कन्या बलदेव जी को ब्याह दी और स्वयं मेरुपर्वत के शिखर पर जाकर वे तपस्या में लग गये धर्मात्मा बलराम जी रेवती के साथ सुख पूर्वक विहार करने लगे।

(८) प्रपन्ध ने अपने गुरु की गाय का वध किया था, इस लिये वे शाप से शूद्र हो गये। इस प्रकार ये वैवस्वत मनु के नौ पुत्र बताये गये हैं।

वैवस्वत मनु जब छींक रहे थे, उस समय इक्ष्वाकु की उत्पत्ति हुई थी इक्ष्वाकु के सौ पुत्र हुए उनमें विकुक्षि सबसे

बड़े थे। वे अपन पराक्रम के कारण अयोध्या नामसे प्रसिद्ध हुये। उन्हें अयोध्या का राज्य प्राप्त हुआ।

उनके शकुनि आदि पांच सौ पुत्र हुए, जो अत्यन्त बलवान और उत्तर भारत क रक्षक थे। उनमें से वशाति आदि अट्ठावन राजपुत दक्षिण दिशा के पालक हुये विकुक्षि का दूसरा नाम शशाद था। इक्ष्वाकु के मरने पर वे ही राजा हुये। शशाद के पुत्र कुकुत्स्थ, ककुत्स्थ के, अनेना, अनेना के पृथु, पृथु, के विष्टराश्व के आद्री, आद्री युवनाश्व, और युवनाश्व, के पुत्र श्रावस्त हुए। उन्होंने ही आवस्ती पुरी बसायी था। श्रावस्त, के पुत्र वृहदश्व और उनके पुत्र कुवलश्व हुये। ये बड़े धर्मात्मा राजा थे। इन्होंने धुन्धु नामक दैत्य का वध करने के कारण धुन्धु मार नाम से प्रसिद्ध प्राप्त की।

बन्धुओं! हम तुम को धुन्धु-वध का वृत्तान्त ठीक-ठीक तुनना चाहता हूं कि कैसे कुवलाश्व का नाम धुन्धु मार हो गया। कुवलाश्व के सौ पुत्र थे। वे सभी अच्छे धुनंधर, विद्याओं में प्रवीण, बलवना और दुर्धिषि थे। सबकी धर्म में निष्टा थी। सभी यज्ञा कर्ता तथा प्रचुर दक्षिण देने वाले थे। राजा ब्रहदश्व ने कुवलाश्व को राजपद पर अभिषिक्त किया और स्वयं वन में तपश्या करने के लिये जाने लगें। उन्हें जाते देख ब्रह्मर्षि उत्तङ्क ने रोका और इस प्रकार कहा—'राजन्! आपका कर्तव्य है प्रजा की रक्षा अतः वही कीजिये। मेरे आश्रम के समीप मधु नामक राक्षस का पुत्र महा सुरधुन्ध रहता है। वह सम्पूर्ण लोकों का संहार करने के लिये कठोर तपस्या करता और बालू के भीतर सोता है। वर्ष भर में एक बार वह बड़े जोर से सांस छोड़ता है। उस समय वहाँ की पृथ्वी डोलने लगती। उसके सांस की हवा से बड़े जोर की धूल उड़ती है और सूर्य का मार्ग ढक लेती है। लगातार सात दिनों तक भूकाम्प होता रहता है इस लिये अब अपने उस आश्रय

में रह नहीं सकता । आप समस्त लोकों के हित की इच्छा से उस विशाल काया दैत्य को मार डालिये । उस के मारे जाने पर सब सुखी हो जायेंगे ।

वृहदश्व बोले-भगवान् ! मैंने तो अब अस्त्र-शस्त्रों का त्याग कर दिया । यह मेरा पुत्र है । यही धुन्धु दैत्य का वध करेगा । राजर्षि वृहदश्व अपने पुत्र कुवलश्व को धुन्धु वध की आज्ञा दे स्वयं पर्वत के समिप चले गये । कुवलश्व अपने सब पुत्रों को साथ ले धुन्धु को मारने चले । साथ में महर्षि उत्तङ्क भी थे । उत्तङ्क के अनुरोध से सम्पूर्ण लोकों का हित करने के लिये साक्षात् भगवान विष्णु ने कुवलश्व के शरीर में अपने तजे प्रविष्ट किया । दुधर्ष वीर कुवलश्व जब युद्ध के लिये प्रस्थित हुए, तब देवताओं का यह महान् शब्द गुंज उठा 'ये श्री मान् नरेश अवध्य है । इनके हाथों से आज धुन्धु अवश्य मारा जायेगा । पुत्रों के साथ वहां जाकर वीरवर कुवलश्व ने समुद्र को खुदवाया । खोदने वाले राजकुमारों ने बालू के भीतर धुन्धु का पता लगा लिया । वह पश्चिम दिशा को घेरकर पड़ा था । वह अपने मुख की आग से सम्पूर्ण लोकों का संहार-सा करता हुआ जल का स्रोत बहाने लगा । जैसे चन्द्रमा के उदयकाल में समुद्र में ज्वार आता है, उसकी उत्तल तरङ्गें बढ़ने लगती हैं इसी प्रकार वहां जल का वेग बढ़ने लगा । कुवलश्व के पुत्रों में से तीन को छोड़ कर शेष सभी धुन्धु मुखाग्नि से भस्म हो गये । तदनन्तर महा तेजस्वी राजा कुवलश्व ने उस महा बली धुन्धु पर आक्रमण किया । वे योगी थे ।

इसलिये उन्होंने योगी शक्ति के द्वारा वेग से प्रवाहित होने वाले जल को पी लिया और आग को भी बुझा दिया । फिर बल पूर्वक उस महाकाय जलचर राक्षस को मार कर महार्षि उत्तङ्क का दर्शन किया । उत्तङ्क ने उन महात्मा राजा को वर दिया कि

तुम्हारा धन अक्षय होगा और शत्रु तुम्हे पराजित न कर सकेंगे। धर्म में सदा तुम्हारा प्रेम बना रहेगा तथा अन्त में तुम्हे स्वर्गलोक का अक्षय निवास प्राप्त होगा युद्ध में तुम्हारे जो पुत्र राक्षस द्वारा मारे गये है, उन्हे भी स्वर्ग में अक्षय लोक प्राप्त होगा। धुन्धु मार के जो तीन पुत्र युद्ध से जोवित बच गए थे उन्हीं के पुत्र का नाम दृढाश्व था।

दृढाश्व, चन्द्राश्व, कपिलाश्व

दृढाश्व का पुत्र निकुम्प हुआ, जो सदा क्षत्रिय-धर्म में तत्पर रहता था। निकुम्भ का युद्ध विशारद पुत्र सहंताश्व था। सहंताश्व के पुत्र दो हुए उस के हमवती नाम की एक कन्या भो हुई, जो आगे

अकृशाश्व, कृशाश्व

चल कर दृषदूती के नाम से प्रसिद्ध हुई। उनका पुत्र प्रसेनजित हुआ, जो तीनों लोकों में विख्यात था। प्रसेनजित् ने गौरी नाप वाली पतिव्रता स्त्री से ब्याह किया था, जो बाद में पति के शाप से बाहुद नाम की नदी हो गई। प्रसेनजित् के पुत्र राजा युवनाश्व हुये। युवनाश्व, के पुत्र मन्धाता, हुए वे त्रिभुवन बिजयी थे। शश-बिन्दु की सुशीला कन्या चैत्ररथी, जिसका दुसरा नाम विन्दुमती भी था, मान्धाता की पत्नो हुई इस भूतल पर उस के समान रूप वाली स्त्री दूसरी नहीं थी। विन्दमती बड़ी पतिव्रता थी वह दस हजार भाईयों की ज्येष्ट भगीनी थी। मान्धाता ने उस के उर्भ से धर्मज्ञ दो पुत्र उत्पन्न किया।

पुरुकुत्स्थ, राजा मुचुकुन्द

पुरुकुत्स्थ के उनकी स्त्री नर्मदा के गर्भ से राजा त्रसदस्यु

उन से सम्भूत का जन्म हुआ। सम्भूत के पुत्र दो हुए।

शत्रुदमन — त्रिधन्वा

राजा त्रिधन्वा से विद्वान त्रय्यारुण हुए। उनका पुत्र महाबली सत्यव्रत हुआ। उसकी बुद्धि खोटी थी। उसने वैवाहिक मंत्रो में विघ्न डालकर दुसरों की पत्नी का अपहरण कर लिया। बालस्वभाव, काम शक्ति, मोह, साहस, और चञ्चलता वश उस ने ऐसा कुकर्म किया था, जिसका अपहरण हुआ था, वह उसके किसी पुरवासी की ही कन्या थी इस अधर्म रूपी शंका(कांठे)के कारण कुपित होकर त्रय्यारुण ने अपने उस पुत्र को त्याग दिया। उस समय उस ने पूछा-'पिता जी ? आपके त्याग देने पर में कहां जाऊं ?, पिता ने कहा............ ओ कुलङ्क ? जा चण्डालों के साथ रह। मुझे तेरे जैसे पुत्र की आवश्यकता नही है।, यह सुन कर वह पिता के कथानानुसार नगर से बहार निकल गया। उस समय महर्षि वशिष्ट ने उसे मना नही किया। वह सत्यव्रत चाण्डाल के घर के पास रहने लगा। उस के पिता भी बन में चले गये। तदनन्तर उसी अधर्म के कारण इन्द्रने उस राज्य में वर्षा बंद करदी।

यह तपस्वी विश्वामित्र उसी राज्य में अपनी पत्नी को रख कर स्वयं समुन्द्र के निकट भारी तपस्या कर रहे थे। उनकी पत्नी अकाल ग्रास्त हो अपने मझले औरस पुत्र के गले में रस्सी डाल दी और शेष परिवार के भरण पोषण के लिये सौ गाये लेकर उसे बेच दिया। राजकुमार सत्यव्रत ने देखा कि विक्रया के लिये इस के गले में रस्सी बांधी हुई है, तब उस धर्मात्मा ने दया कर के महर्षि विश्वामित्र के उस पुत्र को छुड़ा लिया और स्वयं ही उसका भरण-पोषण किया। ऐसा करने में उस का उद्देश्य था महर्षि

विश्वामित्र को संतुष्ट कर के उनकी कृपा करना। महर्षि का यह उन
गले में बन्धन पड़ने के कारण महा तपस्वी गालव के नाम से प्रसिद्ध
हुआ। यह वर्णन (ब्रा० प्र० पृष्ठ २८३-२८६) से लिया हुआ है।
राजकुमार सत्यव्रत भक्ति, दया और प्रतिज्ञा वश विनय पूर्वक
विश्वामित्र जी की स्त्री का पालन करने लगा। इससे मुनि बहुत
संतुष्ट हुए। उन्होंने सत्यव्रत से इच्छानुसार वर मांगने के लिये
कहा। राजकुमार-बोला 'मैं इस शरीर के साथ हि स्वर्ग लोक
'में चला जाऊं।, जब अनावृष्टि का भय दूर हो गया, तब
विश्वामित्र ने उसे पिता के राज्य पर अभिषिक्त करके उसके द्वारा
यज्ञ कराया। वे महा तपस्वी थे, उन्होंने देवताओं तथा वसिष्ठ के
देखते-देखते सत्यव्रत को शरीर सहित स्वर्ग लोक में भेज दिया!
उसकी पत्नी का नाम सत्यरथ था। वह केकई कुल की कन्या थी।
उसने हरिश्चन्द्र नाम विध्पाय पुत्र को जन्म दिया। राजसूर्य यज्ञ
का अनुष्ठान करके वे सम्राट कहलाये। हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम
रोहित था रोहित के हरित और हरित के पुत्र चञ्चु हुए। चञ्चु के
पुत्र का नाम विजय था। वे सम्पूर्ण पृथ्वी पर विजय प्राप्त करने
के कारण विजय कहलाये। विजय के पुत्र राजा रुरुक हुए, जो धर्म
और अर्थके ज्ञाता थे। रुरुक के वृक,वृक के बाहु और बाहु के सगर
हुए वे गर यर्थात विष के साथ प्रकट हुए थे, इस लिये उन का नाम
सगर हुआ। उन्होंने भृगुवंशी और्व मुनि से आग्नेय अस्त्र प्राप्त
कर ताल जङ्घ और हैहय नामक क्षत्रियों को युद्ध में हराया और
समुची पृथ्वी पर विजय प्राप्त की। फिर शक, पह्लव तथा पारदों
के धर्म का निराकरण किया।

राजा बाहु व्यसनी थे, अतः पहले हैहय नामक क्षत्रियों ने
तालजङ्घों और शकों की सहायता से उनका राज्य छीन लिया।
यवन पारद, काम्बोज तथा पाह्लव नाम के गणों ने भी हैहयों के
लिये पराक्रम दिखाया। राज्य छिन जाने पर राजा बाहु दुखी
हो पत्नी के साथ बन में चले गये। वहीं उन्होंने अपने प्राण त्याग
दिये। बाहु की पत्नी यादवी गर्भवती थी। वे भी राजा का सहगमन
करने को प्रस्तुत हो गईं। उन्हें उनकी सौत ने पहले से जहर दे
रक्खा था उन्होंने वन में चिता बनायी और उस पर आरूढ हो
पति के साथ भस्म हो जाने का विचार किया भृगुवंशी और्व मुनि
को उन की दशा पर बड़ी दया आयी। उन्होंने रानी को चिता में
जलने से रोक दिया। उन्हीं के आश्रम में वह गर्भ जहर के साथ ही
प्रकट हुया। वही महाराज सगर हुए और्व ने बालक के जात कर्म
आदि संस्कार किया। वेद शास्त्र पढाये तथा आग्नेय अस्त्र भी प्रदान
किया, जो देवताओं के लिये भी दुःसह है। उसी से सगर ने
हैहयवंशी क्षत्रियों का विनाश किया और लोक में बड़ी भारी कीर्ति
पायी। तदनन्तर उन्होंने शक, यवन, कम्बोज, पारद तथा पाह्लव
गणों का सर्वनास करने के लिये उद्योग किया। वीरवर महात्मा
सगर की मार पड़ने पर वे सभी महर्षि वासिष्ट की
शरण में गये और उनके चरणों पर गिर पड़े। तब महां तेजस्वी
वसिष्ट नेकुछ शर्तके साथउन्हें अभयदान दिया।
और राजा सगर को रोका। सगर ने अपनी प्रतिज्ञा तथा
गुरु के बचन का स्वीकार करके केवल उनके धर्म का निराकरण
किया और उनके वषे बदल दिया। शकों के आधे मस्तक को मुंडा
दिया। पारदों के सारे केश उड़ा दिया धर्म विजयी राजा सगर ने
इस पृथ्वी को जीत कर अवश्वमेघ यज्ञ की दीक्षा ली और अश्वको
देश में विचरने के लिये छोड़ा। वह अश्व जब पुर्व दक्षिण समुन्द्र

के तट पर विचर रहा था, उस समय किसी ने उस को चुरा लिया और पृथ्वी के भीतर छिपा दिया। राजा ने अपने पुत्रों से उस प्रदेश को खुदवाया। महा सागर की खुदाई होते समय उन्होंने वहां आदि पुरुष भगवान् विष्णु को जो हरि,कृष्ण और प्रजापति नाम से भी प्रसिद्ध है, महर्षि कपिल के रूप में शयन करते देखा। जागने पर उनके नेत्रों के तेज से वे सभी जल कर भस्म हो गये। केवल चार ही बचे,

जिन के नाम यह है। वर्हिकेतु, सुकेतु, धर्मरथ, पञ्चनद, ये ही राजा के वंश चलाने वाले हुए। कपिल रूप धारी भगवान् नारायण ने उन्हें वरदान दिया कि 'राजा इक्ष्वाकु का वंश अक्षय होगा और इस की कीर्ति कभी मिट नही सकती।', भगवान् ने समुन्द्र को सगर का पुत्र बना दिया और अन्त में उन्हे अक्षय स्वर्ग वास के लिये भी आशीर्वाद दिया। उस समय समुन्द्र ने अर्घ्य लेकर महाराज सगर का वन्दन किया। सगर का पुत्र होने के कारण ही समुन्द्र का नाम सागर हुआ। उन्होंने अश्वमेध यज्ञ के उस अश्व को पुनः समुन्द्र से प्राप्त किया और उसके द्वारा सौ अश्वमेध यज्ञ के अनुष्ठान पूर्ण किया। सगर के साठ हजार पुत्र कैसे हुए? वे अत्यन्त बलवान और वीर किस प्रकार हुए यह आप लोग ध्यान पुर्वक सुनो।

सगर की दो रानियां थी, जो तपस्या कर के अपने पाप दग्ध कर चुकी थीं। उनमें बड़ी रानी विदर्भनरेश की कन्या थी उनका नाम केशिनी था और छोटी रानी का नाम महती था। वह अरिष्टनेमि की पुत्री तथा परम धर्म परायण थी इस पृथ्वी पर उस के रूप की समता करने वाली दुसरी कोई स्त्री नही थी महर्षि और्व ने उन दोनों को इस प्रकार वरदान दिया-'एक रानी साठ हजार पुत्र प्राप्त करेगी और दुसरी को एक ही पुत्र होगा, किन्तु

यह वंश चलाने वाला होगा। इन दो वरों में से जिस की जिस से इच्छा हो, वह वही ले ले।, तब उनमें से एक ने साठ हजार पुत्रों का वरदान ग्रहण किया और दूसरी वंश चलाने वाले एक ही पुत्र को प्राप्त करना चाहा। मुनि ने 'तथास्तु' कह कर वरदान दे दिया; फिर एक रानी के राजा पञ्चजन हुए और दूसरी ने बीज से भरी हुई एक तूंबी उत्पन्न की। उस के भीतर तिलके बराबर साठ हजार गर्भ थे वे समयनुसार सुख पूर्वक बढने लगे। राजा ने उन सब गर्भों को घी से भरे हुए घड़े में रखवा दिया और उनका पोषण करने के लिये प्रत्येक के पिछे एक-एक धाय नियुक्त कर दी। तत्पश्चात् क्रमशः दस महीनों में सगर की प्रसन्ता बढ़ाने वाले वे सभी कुमार उठ खड़े हुए। पञ्चजन ही राजा बनाये गये। पञ्चजन के पुत्र अंशुमान हुए, जो बड़े पराक्रमी थे। उन के पुत्र दिलीप हुए, जो (खट्वाङ्ग) के नाम से भी प्रसिद्ध है जिन्होंने स्वर्ग से यहाँ आकर दो घड़ी के ही जीवन में अपनी बुद्धि तथा सत्य के प्रभाव से -परमर्थ साधन के द्वारा तीनों लोक जीत लिया। दिलीप के पुत्र महाराजा भगीरथ हुए, जिन्होंने नदियों में श्रेष्ठ गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर उतार कर समुद्र तक पहुंचाया और उन्हें अपनी पुत्री बना लिया। भगीरथकी पुत्री होने के कारण ही गंगा को भागीरथी कहते है भागीरथी के पुत्र राजा श्रुत हुए श्रुत के पुत्र नाभाग हुए, जो बड़े धर्मात्मा थे। नाभाग के पुत्र अम्बरीष हुए जो सुन्धुद्वीप के पिता थे। सुन्धुद्विप के पुत्र अयुताजीत हुए और अयुताजित महायस्वी ऋतुपर्णकी उत्पत्ति हुई, जो द्युतविद्या के रहस्य को जानते थे। राजा ऋतवर्ण महाराज नल के सखा तथा बड़े बलवान थें। ऋतपर्ण के पुत्र महायशस्वी आर्तुपर्णि हुए। उनके पुत्र सुदास हुए, जो इन्द्रके मित्र थे। सुदास के पुत्रको सौदास बताया गया है वे

राजा (मित्रसह)
हो (कल्माष पाद) के नाम से विख्यात हुए तथा
भी उन्हीं का नाम था। कल्माषपाद के पुत्र सर्वकर्मा हुए, सर्वकर्मा
के पुत्र, अनरण्य थे। अनरण्य के दो पुत्र हुए। अनमित्र, रघु,
अनमित्र के पुत्र राजा दुलिदुह थे। उनके पुत्र का नाम दिलीप हुआ
जो भगवान् श्री रामचन्द्र जी के प्रपितामह थे। दिलीप के पुत्र महा-
बाहू रघु हुए, जो अयोध्या के महाबली सम्राट थे। रघु के अज और
अज के पुत्र दशरथ हुए। दशरथ के महायशस्वी धर्मात्मा श्री राम
का प्रादुर्भाव हुआ। श्री रामचन्द्र जी के पुत्र कुश के नाम के विख्यात
हुए। कुश से अतिथि का जन्म हुआ। जो कि बड़े यशस्वी और
धर्मात्मा थे। अतिथि के पुत्र महापराक्रमी निषध थे। निषध के नल
और नल के नभ हुए नभ के पुण्डरीक और पुण्डरीक के क्षेमधन्वा
हुये। क्षेमधन्वा के पुत्र महा प्रतापी देवानिक थे। देवानिक से
अहीनगु, अहीनगु से सुधन्वा, सुधन्वा से राजा शल, शल से
धर्मात्मा उक्थ, उक्थ, से व्रजनाभ, और व्रजनाभ से नल का जन्म
हुआ।

बन्धुओ! पुराणों में दो ही नल प्रसिद्ध हैं—एक तो चन्द्रवंशीय
वीरसेन के पुत्र थे और दूसरे इक्ष्वाकु-वंश के धुरंधर वीर थे इक्ष्वाकु
वँश के मुख्य-मुख्य पुरुषों के नाम बताये गये। ये सूर्य वंश के
अत्यन्त तेजस्वी राजा थे। अदिति नन्दन सूर्य की तथा प्रजाओं के
पोषक वैवस्वत (श्राद्धदेव) मनु की इस सृष्टि परम्परा का पाठ
करने वाले मनुष्य सन्तान वाले होते है और सूर्य (अर्क) का
सायुज्य प्राप्त करते है।

ब्र० पु० अ० ३७

धुरधर के पुत्र सुदर्शन हुए सुदर्शन के पुत्र आग्रवर्णा हुए
आग्रवर्णा के पुत्र शीघ्र हुए शीघ्र के पुत्र मरू हुए। ये मरु योग में
निवास करते हुए अब भी कलापग्राम को अवलम्बन कर के निवास

करते हैं। और ये ही आगामी युग में सूर्य (अर्क) वंशी क्षत्रिय के प्रवृीतीयता होगें, "।" मरु के पुत्र प्रश्रुसंधि हुए प्रश्रुसंधि के पुत्र अभिशरण हुए और अभिशरणके पुत्र ओमशरण हुए उनके पुत्र सहस्वान हुए सहश्वान के पुत्र विश्वाहन हुए विश्वाहन के पुत्र प्रसनजित हुए प्रसनजित के पुत्र तक्षक हुए तक्षकके पुत्र वृहद्बल हुए वृहद्बल के पुत्र वृहदारणाय हुए वृहदारणाय के पुत्र उरुक्रयि हुए उरुक्रयि के पुत्र वत्सवद्ध हुए वत्सवद्ध के पुत्र प्रतिव्योमा हुए प्रतिव्योमा के पुत्र दिवाकर हुए दिवाकर के पुत्र सहदेव हुए सहदेव के पुत्र वृहदश्व हुए वृहदशव के पुत्र भानुमान हुए भानुमान के प्रतिकशान हुए प्रतिकशान के पुत्र सुनक्षत हुए सुनक्षत के पुत्र पुष्कर हुए पुष्करके पुत्र अन्तरिक्ष हुए अन्तरिक्ष के पुत्र सुतमा हुए सुतमा के पुत्र अमित्रजित हुए अमित्रजित के पुत्र वृहद्वाज़ हुए वृहद्वाज के पुत्र बरही हुए बरही के पुत्र कृतजय हुए कृतजय के पुत्र रणञ्चय हुए रणञ्चय के पुत्र इक्ष्वाकुनें हुए इक्ष्वाकुनें ने अपनी प्यारी रानी की बातमें पड़के अपने चार बड़े लड़कों को वनवास दे दिया वही हिमाचल के पास एक शाल (साखा) के वन में जा बसे उनकी ही सन्तान शाक्य हुई जो कि बड़ी रानों के थे। यह महामानव बुद्ध ४४ ४६ से लिया गया है

हिमाचल दक्षिण आचलमें कपिल गौतम मुनि निवास करते थे वहां इक्ष्वाकु वंशी राजकुमार आये खसों के खम्भों की भांति उनकी दिव्य काया थी। सिंह की सी चौड़ी उनकी छाती थी। असाधारण लम्बी उनकी भुजायें थीं। अपनी दिव्य कान्ति लक्ष्मी और यश के होते हुए भी उनकी रग रग में विनय भरा था। चुप-चाप महर्षि कपिल के आश्रम में जा बसे। वहां पहुँच कर उन्होंने कपिल गौतम को अपना गुरु बनाया। और उस गुरु के गोत्र से ही स्वयं उनका गोत्र भी गौतम हुआ। गोत्र दो प्रकार से चलते थे एक पिता के कुल से दूसरा गुरु के नाम से। इसी कारण कभी-कभी एक ही पिता के दो पुत्र अपने भिन्न गुरुओं के कारण भिन्न गोत्र

कपिल के आश्रम के निकट जहां उन इक्ष्वाकु
नाम धारण करते थे। कपिल के आश्रम के निकट जहां उन इक्ष्वाकु
वंशी राजकुमारों ने आकर निवास किया वहां शाक वृक्षों की बहुलता
थी इसलिये वे राजकुमार शाक्य वंशी कहलाने लगे। तभी से पृथ्वी
पर शाक्य कुल प्रसिद्ध हुआ। जैसे भार्गव ने सगर कुमारों के किये
थे वैसे ही जैसे कण्व ने शकुन्तला के वीर पुत्र भरत को किया था
मैथिली के बुद्धिमान पुत्रोंके महर्षि बाल्मीकी ने किया था उन क्षत्रियो
के ऋषियों के साथ वहां बसने से वृद्ध और दीप्ति वहा समान रूपसे
विराजी। एक दिन उन क्षत्रिय कुमारों के कल्याण का विचार करते
हुए कपिल मुनि जल का घड़ा ले आकाश में उड़ गये, और उनसे
बोले-मैं इस अमृत के कलश से पृथ्वी पर जल को गेरता हूँ तुम उस
धार का अनुसरण करो। तब मस्तक झुका कर बहुत अच्छा कहते
हुए शाक्य कुमार शीघ्रगामी घोड़ों से जुते रथ चढ़े और मुनि के
कलश से गिरती जलधार के पीछे-पीछे चले आश्रम भूमी के चारों
ओर जल की धार को मुनि ने शतरंज की तख्तों की भांति बना दी
और तब रुक कर राजपूतों से कहा इस भूमी पर जिसकी सीमाए
मेरे डोल के जल की धार और तुम्हारे हाँक रथ के पहियों की लीक
से बनी है उनके भीतर ही तुम एक नगरका निर्माण करो, और वहीं
सुख पूर्वक निवास करो।

कुछ काल पश्चात् कपिल मुनि स्वर्ग सिधारे, और शाक्य
कुमार योवन के प्रावल्य से मस्त हाथीयों की भाती सभी पर्वतों वनो
में बिहार करने लगे, निरकुश अपने लम्बे वस्त्रों और केशोंको पट्टे से
कस पीठ पर तीर भरे तरकश और कधों पर धनुष धारें अगुलियों
में चमड़ा के दस्ताने पहिने व इधर-उधर अदम्य पोरष से घुमने
लगे। भरत की भाती वे सिह की खबर लेने, और गजों पर अपने
तीरों की परीक्षा करते। देवताओं के से कर्म वाले वे कुमार
निस्सदेह उच्छृखल हो उठे। आश्रम अपने प्रकृत पर उतर आये हैं,
और उन्होंने अपनी स्वाभाविक हिरज वृत्ति अपनाली है। तब वे

सतप्त हो उठे। विनाय; तप और अहिंसा मुनियो का धर्म था। और शाक्यों की विपरीत चेतना जब स्वभावक उठी, तब तापस वहां स्थान छोड़ हिमालय से उपरी श्रेणी में बसे गये। आश्रम जब तपस्वीयों से सुना हो गया तब कुमारों को अपनी हानि का बोध हुआ। वे सहास उदास हो उठे, और जलते हुए अजगरों की भांति लम्बी-लम्बी सासों लेने लगें। परन्तु वे भी कुछ फिर अभागे न थे, क्योंकि आखिर मुनि के सम्पर्क से जो उन्होने कभि पुण्य कर्म किये थे उनसे उनकाभाग्योदय हुआ और उन्हीं के प्रभाव से उन्हें अनेक निधिया प्राप्त हुई। अन्नत सम्पदा उनके जैसे हाथ जोड़ आ खड़ी हुई। और तब उन्होंने मुनि के आदेश अनुसार कय करने का निश्चयं किया-मुनी कलश से गिरी जल धारा और अपने रथ के पहिये की लीक के भीतर शाक्य कुमारां ने नाम पर ही कपिल वस्तु या कपितवास्तु पड़ा। नगर के नदी करे सी चौड़ी परिखा से धित था। उसका राज मार्ग प्रशस्त और सीधा था। प्राचोर उसके पर्वतों के से ऊंचे थे। लगता था जैसे (गिरीवृज) हिमालय की उस छाया में उठ खड़ा हुआ हो। नगर की अट्टलिकाए श्वेतपीत रग से चमक उठी और उसकी पण्ड पोथी (बाजार) अनेक निक प्रकार से बाटा दी गई घोड़े और हाथिओं से भरा नगर अकसर अपने निवासिओं को उदुधत अहकार से भरदेता है पर कीपलस्वत के निवासिओं में किसी प्रकार के अहकार की दुर्भावा नहीं हुई। वहां किसी ने याचको से अपना धन नही छिपाया हा ? 'विनय के कारण ज्ञान और पौशी को निश्चय छिपा रखा नगर धन।

विद्या और सम्पत्ती का गुप्त स्थान बन गया। गुणियों का वह निवास बना शरणथियो का शरण शस्त्रज्ञो का अनार बीरों का स्तम्भ उन वीरो ने समाजी उत्यसों और त्रियानुष्ठानों से नगर को

पडित किया अन्यथ पुर्वीक उन्होंने कभी करन लगया और नगर बन धन्य से भर गया। उन वीरा ने इन्द्रबल तेज से अपने नगर की रक्षा की और इस प्रकार यायती के पुत्रों की सी ख्याती प्राप्त की शाक्य राजा अभिजात थे। उनकी आचरण अभिजात के से थे। पर जैसे रात्री तारों और नक्षत्रों के होते भी चन्द्रमा बिना नहीं सजती वैसे ही वह नगर भी राजा बिना नहीं सजता था। तब अपने बड़े भाई शाक्य को जो सब से गुण और आयु में सबसे चतुर थे। राज्य पद पर अभिषिक्त्त किया और वह विनयी कीर्ति मान सदृस्य भाई राष्ट्र की रक्षा के लिये राजा कार्य में जुड़ गये। और भाइओं के साथ कपिलवस्तु को रक्षा आरम्भ की समय बीत चला। एक पीढ़ि के बाद दूसरी पीढि आई—नीति से और शकिती से सम्पन्न शाक्य का नाम सधिक करती। और तब उस राज परम्परा में शुद्ध कर्म शुद्धदन राज्य धिकारी हुए। गौतम बुद्ध नैपाल की तराई में ई० पू० पांचवी शताब्दी में शाक्य वंश के राजा शुद्धोदन राज्य करते थे।

उनकी राजधानी आजकल के बस्ती जिले के पूर्वोत्तर सीमा पर कपिलवस्तु नामक नगर में थी शाक्य राज्य गण राज्य था और शुद्धोदन उस गण राज्य के गण मुख्य थे।

भारतवर्ष सरल इतिहास १०३ भगवा शरण उपाध्याय। से

धर्मयुग अंक २१ से

काल चक्र की गति व गौरव शाली सूर्य वंशी राजाओं के नाम पर भी यह वंद अनेक नामों में परिवर्तन होता गया। अर्थात सूर्य वंशी, शाक्य वंशी, भी कहा गया है भगवन रामचन्द्र जी के ५८ पीढ़ी बाद नैपाल की तरीई के कपिल वस्तु नामक नगर में सूर्य वंशी इक्षलाकु कुलोद्भव राजा शुद्धोदन के एक पुत्र हुआ। जिसके नाम सिद्धार्थ गौतम अर्क बन्धु और शाक्य मुनि प्रख्यात हुए

अमर कोष प्रथम काण्ड स्वर्ग वर्ग १ पेज ८ इनके प्रति इस प्रकार लिखा है। शाक्य मुनिस्तु सः।

शाकय मुनि

सशाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौदादनिश्च सः। १२।
गौतम श्चश्चार्क बन्धुश्चों माया देवी सुतश्च सः॥

जिसका आशय शुद्धोदन और माया देवी के सुत गौतम के नाम के परियायवाची नाम है। यहां पर गौतमश्चर्क के बन्धुश्च का तात्पर्य यह है कि गौतम बुद्ध का नाम अर्क बन्धु भी था, जिनके बंशज अर्क बंशी, शाक्य बंशी, तथा गौतम क्षत्रिय कहलावे। ज०अ० में एक विद्वान का लेख अर्क बंश के प्रति इस प्रकार आया है कि:- इक्ष्वाकु कुलोद्भव शाक्य बंशीय बुद्धः—

अर्थात—अर्क जाति इक्ष्वाकु वंश के अन्तरगत शाक्य वंशीय क्षत्रिय जाति है। अर्क वंश शब्द अर्क बन्धु से बना है बंधु का लोप होकर केवल अर्क इस जाति का नाम रह गया अमर कोष पेज ३३ प्रथम कांड में अर्क शब्द सूर्य के परियायवाचो ना में लिखा गया है। साइकलो पेडिया आफ इन्डिया पेज १५७ में लिखता है कि अर्क वंश जिनकी उत्पत्ति सूर्य से हैं यही आज अर्क वंशी कहलाते है जो सूर्य वंशी राजपूत हैं।

महात्मा गौतम बुद्ध के काल के भारतवर्ष के १६ हिस्से थे, जिनमें कौशल राज्य, पाँचाल (शाक्य) राज्य, वत्स, राज्य, गांधार राज्य, काम्कोज राज्य मुख्य थे। बुद्ध जी के पूर्व महाभारत युद्ध में

कौरव तथा पांडवों ने कम्बोज ऋषिक प्राह्लाद तथा मद्र क्षत्रियों से जो पाचकल (शाक्य) राजवंश की शाखाएं है सहायता लिया था जिनमें चन्द्रवर्मा, सुदक्षिणा, शल्य और इनके दो पुत्र रुक्मांगद व रुक्मरथ थे। ऋषिक क्षत्रिय शक्यो का साहित्य आर्षी भाषा में प्राप्त हुआ है। ऋषिक क्षत्रिय शाक्य राज्य वंश के वंशज है जिससे अर्क क्षत्रियों का विकास है। अतः साफ स्पष्ट है कि उत्ताम कुल होने से अर्क का श्रेष्ट नाम सूर्य हुआ अस्तु यह जाति शुद्ध अर्क क्षत्रिय जाति है।

अर्क जाति के भेद

[illegible], गढ़नायक, कोटवार, पहरी, गोरखा, गोपाल, राठौर शोशोदिया, खंडायत, खांगी और खांगर है ज्यादा और विवरण के लिए क्षत्रिय वंश प्रदीप देखिए।

खंगारों का आचार विचार मुसलमानों के सताए जाने पर अधिक गिर गया था इससे वर्तमान लोक में लोग इनसे घृणा करने लगे तब खंगारों ने जो बुन्देल खंड और सौराष्ट्र देश में खगार बोले जाते है चतुरता से कुल भेद एक ही होने के कारण अपने को [illegible] मशहुर किए परन्तु अर्क क्षत्रियो ने इनके भ्रष्टाचरण को देख कर इनसे सम्पर्क नही किया।

अर्क क्षत्रियों का शासन

दशवी और पन्द्रहवी शताब्दि का इतिहास देखने से पता चलता है कि इस काल में देहली और अवध के राज्य अर्कवंशी क्षत्रियो के अधिकार में थे। अवध गजेटियर पृष्ट ३५४ में लिखता है कि सन् ९१८ ई० में तिलोकचन्द अर्कवंशी क्षत्रिय राजा ने देहली पर चढ़ाई करके विक्रमपाल को हराकर सिंहासन अपने अधीन किया। देहली की राजधानी ९ पीढ़ी तक अर्क क्षत्रियों के अधिकार

में रहो। और उसने जाति के यादगार के रूप में एक रोड बनवाया था जो कि अकन् रोड के नाम से विख्यात है और शक्तिशाली अर्क राजों का नाम और राज्य का समय इस प्रकार है:—

(१) तिलोकचन्द	५४ साल	२ महीना	१० दिन
(२) विक्रमचन्द	१२ साल	० महीना	१२ दिन
(३) अमीनचन्द (मानिक चन्द)	१० साल	० महीना	५ दिन
(४) रामचन्द	१३ साल	११ महीना	८ दिन
(५) हरीशचन्द	१४ साल	६ महीना	१४ दिन
(६) कल्याणचन्द	१० साल	५ महीना	४ दिन
(७) भीमचन्द	१६ साल	२ महीना	६ दिन
[८] लोकचन्द	२६ साल	३ महीना	२२ दिन
[९] गोविन्द चन्द	२१ साल	७ महीना	१२ दिन

गोविन्द चन्द के मरने के बाद उनकी रानी भीम देवी[पद्मावती] ने एक साल राज्य सँभाला फिर वह भी मर गई इसके कोई सँतान न थी।

चौदहवी शताब्दीमें अर्कों के राजा सलदयाल सिंह [सलहिया] संडीला और इनके भाई मलहिय सिंह ने मलीहाबाद को बसाया था सन् १४७० ई० तक अर्कों ने मलीहाबाद में राज्य किया।

अन्वेषण नामक ग्रन्थ पृष्ट २४५ में।

+ जिला फतेहपुर में खागा ग्राम खड्गसिंह आकर क्षत्रिय के अधिकार में था कथ, कटोघन में अर्कों का राज्य था गदरके आस-पास यह राज्य नष्ट हो गए। [+ दन्त कथा]

(राजपूत कौन थे)

रातपूत शब्द की व्युत्पत्ति—राजपूत संस्कृत शब्द राजपूत का अपभ्रंश है। प्राचीन काल में राजपूत शब्द से किसी जाति का

बोध नहीं होता था, बल्कि यह राजकुमार या राजवंशका सूचक था। इस शब्द का प्रयोग मुसलमानो के आने के पूर्व कभी भी किसी एक जाति के लिए नही हुआ। चूंकि क्षत्रिय वर्ग ही भारत में शासन करता था अतः उस वर्ग के लिए राजपूत शब्द का प्रयोग मुसलमानी युग में प्रारम्भ हो गया। धीरे धीरे यह शब्द जाति-सूचक हो गया और कुछ दिनो बाद क्षत्रिय वर्ग राज पूत नाम से प्रसिद्ध हो गया।

भारत वर्ष का सरल इतिहास पेज २२८ से

जाति जीवन

यह स्पष्ट प्रकट है कि जाति के जीवन का संसार व्यापी सिद्धान्त है जो हमको मालूम हो सकता है जिस प्रकार ठीक दृष्टि, ठीक संकल्प, ठीक वचन, ठीक कर्म, ठीक जिविका, ठीक प्रयत्न, ठीक सम्मति, ठीक समाधी आदि जाति जीवन का हो सकता है जैसे कि संगठन शक्ति और धर्म की स्थापना, जाति मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बढ़ाना, शक्ति व्यवस्था को सुदृढ़ बनानेके लिये उपाय करना, समाजिक सांस्कृतिक और वेद स्मृतियों के अनुसार सनातन धर्म की उन्नति करना जातियों में कुरीतियें अगर हो धार्मिक सिद्धान्तों के अनुसार दूर करना जाति समस्याओं को सुलझाने में सहयोग देना जाति भाव धर्म अथवा स्त्री पुरुष के भेद भावसे रहित सब के मूल अधिकारों के प्रति सम्मान उत्पन्न करना, इन उद्देश्यो की पूर्ति के हेतु सभा के कार्यमें संगठन स्थापित करने के लिये एक माता के बालक हो कर कार्य करना आवश्यक है।

निवेदन

यह एक रहस्य तथ्य है कि मन्द बुद्धि, मुर्ख, डरपोक, कमजोर तबियतके 'सीधे' कहलाने वालोंकी अपेक्षा वे लोग अधिक जल्दी आत्मोन्नति कर सकते हैं, जो अब तक सक्रिय, जागरुक

चैतन्य, पराक्रमी, पुरुषार्थी एवं हर काम में अड़चन करने आ रहे हैं। कारण यह है कि मन्द चेतना वालों में शक्ति का स्रोत बहुत ही न्यून होता है, वे पूरे सदाचारी और भक्त रहें तो भी मन्द शक्ति के कारण उनकी प्रगति अत्यन्त मन्दगति में होती है। पर जो लोग शक्तिशाली हैं; जिनके अन्दर चैतन्यता और पराक्रम का निर्झर तूफानी गति से प्रवाहित होता है वे जब भी, जिस दिशा में भी, लगेंगे उधर ही सफलता का ढेर लगा देंगे। अब तक जिन्होंने कुबुद्धि का अपना झण्डा बुलन्द रखा है, वे निश्चय ही शक्ति सम्पन्न ता है पर उनकी शक्ति कुमार्गगामी रही है यदि वह शक्ति सत्पथ पर लग जाये तो उस दिशा में भी आश्चर्यजनक सफलता उपस्थित कर सकते हैं। गदहा दस वर्ष में जितना बोझ ढोता, हाथी उतना एक दिन में ढो सकता है। आत्मोन्नति भी एक पुरुषार्थी है। इस मञ्जिल पर भी वे ही लोग शीघ्र पहुँच सकते हैं जो पुरुषार्थी है, जिनके स्नायुओं में बल और मन में अदम्य साहस तथा उत्साह है। यदि अब संभल जाया जाय और सिधे राजमार्ग से, सतोगुणी आधार से आगे बढ़ा जाये तो पिछला उजवल कार्यक्रम भी सहायक सिद्ध होगा। कुबुद्धि कुमार्ग पर चलने से जो घाव हो गये हैं वे थोड़ा दुख देकर शीघ्र अच्छे हो सकते हैं।

समाज के कुछ त्याग करने योग्य दोष

१. भली और बुरी-दोनों ही बातें समाज में रहती है तो कभी भली रहती तो कभी बुरी। परिवर्तन होता ही रहता है। यह ठीक नहीं कि पुरानी सभी बात बुरी ही होती हैं अथवा नयी सभी ही बातें अच्छी ही होती हैं।

अच्छी बुरी दोनों ही में है मनुष्य को विवेक-विचार तथा साहस के साथ बुरी का त्याग और अच्छी का ग्रहण करना चाहिये। जो मनुष्य मिथ्या आग्रह से किसी बात पर अड़ जाता है,

उसका विकास नहीं होता। यही हाल समाज का है। हमारे जाती समाज में भी अच्छी-बुरी बातें हैं जो अच्छी हैं उनके सम्बन्ध में तो कुछ कहना नहीं है। जो बुरी हैं फिर चाहे वे नयी हों या पुरानी-उन्हीं पर विचार करना है। यहां संक्षेप में कुछ ऐसी बुराइयों पर विचार किया जाता है जिनका त्याग समाज के लिये आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक और आर्थिक सभी दृष्टियों से परम आवश्यक हैं।

रहन-सहन

समय, वातावरण तथा स्थिति के अनुसार रहन-सहन में परिवर्तन तो होता ही है, परन्तु ऐसी कोई बात नहीं होनी चाहिये जो घातक हो। इस समय हम देखते हैं कि जाति समाज का रहन-सहन बहुत तीव्र गति से पाश्चत्य ढंग का होता चला जा रहा है। पाश्चात्य रहन-सहन बहुत अधिक खर्चीला होने से हमारे लिये आर्थिक दृष्टि से तो घातक है ही, हमारी सभ्यता और सदाचार के विरुद्ध होने से आध्यात्मिक और नैतिक पतन का भी हेतु है। इस लिये जो हमारी समाज में तथा दिलों में घातिक का समान बनाये बैठे हैं, उनको बदलना आदि-आदि त्याग होना आवश्यक है।

रस्म-रिवाज़

रस्म-रिवाजों में सुधार चाहने वाली सभाओं के द्वारा जहां एक ओर एक बुरी प्रथा मिलती है तो उसकी जगह दो दूसरी नयी आ जाती है जब तक हमारा मन नहीं सुधर जाता तब तक सभाओं के प्रस्तावों से कुछ भी नहीं हो सकता। दहेज की प्रथा बड़ी भयङ्कर है, इस बात को सभी मानते हैं। चारों ओर से पुकार भी काफी होती हैं ज्यों-की-त्यों हुए रूप में वर्तमान है और

इसका विस्तार जरा भी रुका नहीं है साधारण स्थिति के गृहस्थ के लिये तो एक कन्या का विवाह करना मृत्यु की पीड़ा भोगने के बराबर सा है। आज कल मोल तोल होते हैं। देहज का इकरार तो पहले हो चुकता है, तब कहीं सम्बन्ध होता है और पूरा दहेज न मिलने पर सम्बन्ध तोड़ दिया जाता है।

विवाह वगैरह में शास्त्रीय प्रसंगो में कायम रखते हुये जहां तक हो सके कम से कम रसमें रहनी चाहिये और वे भी ऐसी, जो सुरुचि और सदाचार उत्पन्न करने वाली हों।

जाति के साधन के तरीके

जाति जीवन का साधन ढुंढ रही है सो राम नाम लो और तैयारी करो कुबुद्धि से कुछ नहीं बनेगा ऐसी दशा में हम उस आत्म जीवन बूटि के लेने को हिम्मात की कमर बांध कर चले, जिससे हमारी जाति पुनः जीवित हो। श्रद्धा, कर्म, पाठ आदि सब कुछ सिखें जिससे जाति को लाभ हो। तो उसके लिये अवश्य है कि अपने हृदय को टटोलो और मालूम करो कि वे कौन से अवगुण है जिनके कारण जाति की ऐसी गति हुईहै किये कि जब तक जाति सख्या की दृष्टि से पर्याप्त प्रतिष्ठा रखती है, लालच, कहिली, खुदगर्जी इन्द्रिय लोलुपता और वुजदिल्ली में गिरफतार न हो, उस पर तमाम दुःख मिलकर आजाये, तो भी विजय नहीं प्राप्त कर सकती सो जाति को चाहिये कि उन भितरी शत्रुओं का मुकाबिला करों जो उसके जीवन को कुन की तरह खा रही है। तब वह जाति के इतिहास को जिन्दा रखने के लिये खड़ी रह सकेगी।

मन विजय से कल्याण

जिसने मन जीता उसने जग जीता। जैसे साधू संतों ने अपने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करली है। जैसे पवन ने बादलों पर विजय

पाती है। पवन की झकोर आई जानों बादल चले। जाति लेखन की अनभिज्ञता या कानून की अवहेलना करने से नहीं गिरी, बल्कि उन सद्‌गुणों के न होने से जो और जातियों में पाई जाती है। क्या गिद्ध जो लाशसे बोटिया नोच नोच कर अपनी व्यापकता करता है उसशख्स को मौतका कारण होता है ? मरता तो आदमी बीमारी या दुर्घटना से है। गिद्ध तो केवल इस बात को सब पर प्रकट करता है कि यहां लाश पड़ी है। वह चिन्ह है सबब नहीं, परिणाम है कारण नहीं ! जातिय इतिहास उन सद्‌गुणों को जीवत रखता है जिन पर जातिय अस्तित्व का दारोमदार है चिराग ही से चिराग जलता है। महापुरुषों की मिसाल ही हमको उनका अनुकरण करने पर तैयार करती है। इतिहास के द्वारा हम महात्मा बुद्ध, श्री शङ्कराचार्य गुरु नामक आदि समस्त धार्मिक और नैतिक मार्ग प्रदर्शकों के जीवन चरित्र से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। इतिहास की मुट्ठी में सब धर्मों का अनुकरण है इतिहास से बच कर कोई कहां जायगा ? यह तो हाथी है जिसके पांव में सब का पावे है।

बुजुर्गों की पुकार

इतिहास हमको स्मरण करता है कि हमारा कर्तव्य क्या है। दुनिया के झगड़े में फंसकर जब हम उच्च दीवारों को भूलने लगते है, तो बुजुर्गों की आवाज सुनाई देती हैं कि खबरदार हमारी आन रखना, सपूत रहना जिस तरह हमने जाति और धर्म के लिये कोशिश की, उसी तरह करते रहना, ऐसा न हो कि हमारा प्रयत्न योंहि नष्ट हो जाये।

यह शंख जाति को हर समय जगाता रहता है। इतिहास जातीय मंजिल की अन्धेरी रात में चौकिदार की तरह कहता है कि सोना मत अपने धर्म और जाति की रक्षा करों। यह

सिद्धान्त कभी नहीं भूलना चाहिये कि नैतिक उन्नति का प्रारम्भिक सोता मनुष्य होता है । एक रोशनी फैलती है । दूसरा तो वह महा पुरुष जिसके प्रत्येक काम से हजार शिक्षायें मिलती हैं ।

जिसकी प्रत्येक बात जादू का असर रखती है, जिसका नाम यदि घिस घिसाकर भी मिटावे तो इतिहास मिटायसे नहीं मिटेगा, जिसकी तस्वीर हर दिल में रहेगी चाहे लोग और सब कुछ भूल जाय । नैतिक उन्नति पर मुल्की, दुनियावी और हर तरह की उन्नति का दारोमदार है । अगर जाति के आदमी लालची, डरपोक और स्वार्थी है, तो वह जाति अवश्य नष्ट होगी, चाहे प्रत्येक दुनिया भरके अधिकार उन्हें दान कर दिये जाँय । यदि जाति का आचरण ठीक है तो प्रत्येक दशा में वह प्रसन्न रहेगी । चाहे कोई भी सभा या समाज याजल से न होते हों ।

इतिहास मनुष्यों से हमारा परिचय करता है और इस कारण हमारा सब से बड़ा शिक्षक है इतिहास, इतिहास सन्तो की समाधी है । केवल समाधि चुप सोती है ? इतिहास उनकी हर बात का राग गाता है । इतिहास प्रत्येक बचन और कार्य, प्रत्यक आदत और प्रकृति पर प्रकाश डालता है । जातिय इतिहास से हमको पता लगता है कि हमारे रिवाजों और सँस्थाओं की क्या वास्तविकता है, किस अभिप्राय से उन्हें स्थापित किया गया था, उनमें क्या खुवियां थी । उनसे जाति की एकता और आचरण को किस प्रकार सहायता मिलती थी । एकता की बड़ी धूम थी एकता ही बड़ी कुजी थी । इस लिये अपनी जाति की वृद्धि करना हमारा कर्तव्य है । अपने वंश, अपने धर्म, अपने रिबाजों और प्रथाओं से इनकार नहीं करो अतः जिस जाति का इतिहास जीवित है वह कभी भी नष्ट नहीं हो सकती । इस लिये अर्क जातियों बन्धुओ अपने इतिहासको जीवित रखना अपना धर्म तथा कर्तव्य है बुजुर्गो की यादगार कायम रखना अपना मुख्य कर्तव्य समझना चाहिये ;

❀ भजन ❀

इकाई ही अब तो सिखानी पड़ेगी, दुई तो वहां से भगानी पड़ेगी।
नई नीति फिर से बनानी पड़ेगी, पुरानी कुरीतों को हटानी पड़ेगी॥
संगठन का पौधा पढ़ानी पड़ेगा, सोई हुई शक्ति जगानी पड़ेगी।
छोटी मोटी कुर्त्तीओं का मिटानी पड़ेगी, हमें उनके मार्गों को दिखानी पड़ेगी॥

धीरे-धीरे हिंसा छुड़ानी पड़ेगी, नींव धर्म की फिर जमानी पड़ेगी।
प्रेम की नदी बहानी पड़ेगी, कह मोती जोति बढ़ानी पड़ेगी॥

संगठन शक्ति

संगठन शक्ति किसे कहते हैं? वह कहां रहती है? और उसका कार्य क्या है?

उत्तर—बन्धुओं-(संगठन-मेल-शक्ति-बल) प्रत्येक प्राणियों में प्रारब्ध वेग शक्ति, ज्ञान शक्ति, इच्छा शक्ति, शारीरिक शक्ति और क्रिया आदि ऐसी शक्तियां व्यर्नधक रूप से होती है। जिसमें यदि कोई कार्य अपनी शक्ति से बाहर होती है तो उस काम करने के लिए अन्य मनुष्य की आवश्यकता होती है कार्य को अन्य मनुष्यों की शक्ति मिलने से बल विशेष हो जाता है इसलिये जब अनेक प्राणी मिल कर उपरोक्त शक्तियों के द्वारा जो काम करते हैं वह संगठन शक्ति का प्राताप है और अनेक प्राणियों के मत से विशेष प्रबल हुई शक्ति को ही संगठन शक्ति कहते हैं। यह विशेष तो प्राणियों के मल में रहती हैं। इस को बड़े-बड़े प्राचीन ऋषि वेद कर्ता नीतिज्ञ पुरुषों ने भी नहीं जाना, भला फिर इन विचारों साधारण हिन्दूओं की बात ही क्या है, उससे सब प्राणी रक्षित है, भारत माता की जय इसी शक्ति से हुई, इसी के द्वारा महात्मा

गान्धी को अथवा भारत वासियों को स्वतन्त्रता-प्राप्ति हो गई। जो इस का सत्कार नहीं करता उसका यह भक्षण कर लेती है। इस लिये जातियों कुछ काम करों। देखो इसके शरणागत रामचन्द्र जी हुये तो समुद्र का पुल बांधा और सुवर्ण की लङ्का जली, लक्ष्मण जी मृतक से जीवित हुये। सीता को पुनः वहाँ से लाये। इसको तुम मुख्य समझो। छुआ-छूत करना छोड़ दो क्योंकि इसमें उसका निरादर होता है। उसको तुम अपनी रक्षक समझो इसी में उसका सम्मान है। मैं आपसे हर वक्त यही कहूंगा कि संगठन एक बड़ी शक्ति। देखो जङ्गली गौएं एकत्र हो कर संगठन शक्ति के बल से जंगल के राजा शेर से अपनी रक्षा कर लेती है। यह शेर अनुचित करता है तो उस शेर को अपने बीच में देकर सींगों से मार भी डालती हैं। साहांश उस संगठन शक्ति से प्रताप से उन को कोई सता नहीं सकता। इसी प्रकार दुःख दाई जीवों से अपनी रक्षा करने के लिये जाति को संगठन करना आवश्यक है आपने कभी तास का खेल देखा है। बादशाह को दश बूंद का दहला नहीं मार सकता पर एक बूंद का ऐका मार देता है समझो संगठन कैसी चीज़ है।

सवैया

१. अर्क की माता अमर वरदैनी, संगठन शक्ति फूट रही है।
तांकू एक करों पव मिलके, मति में मेरी यों आय रही है॥
शक्ति के ढिग-ढिग फूटन में, मोकू बहुत सी हानों दिखाय रही है।
पोती कहै ताते देर करो मत, फूट तुम्हें लुटवाय रही है॥

सवैया

२. संगठन शक्ति की पूजा करो, और संगठन शक्ति को शीश झुकाओ।
संगठन शक्ति को सुमरण करो। संगठन शक्ति को मात बनाओ॥

संगठन शक्ति की शरण गहो सब।
संगठन शक्ति को हृदय में लाओ॥
संगठन शक्ति ने काम बने सब।
मोती कहैं मत देर बताओ॥

(सवैया)

६. संगठन शक्ति रक्षक है अरू, संगठन शक्ति भक्षक होगी।
जाको जो मान करै नहीं मानुष, ताके लिये बनी तक्षक होगी॥
जो सत्कार करैं नर जोके, ताके लिये जो रक्षक होगी।
धर्म अरू जान बचावै धन कूं, मोती कहैं जो प्रतिक्षा होगी॥

(सवैया)

७. संत की बात को पान करोगे तो, जगये होंगे पान तुम्हारो।
अमर बनोंगे जगमें रहोगे, आशिष है एक जोही हमारी॥
तुमसेह खोल के कहु में प्यारे, समझ लो मेरो एक इशारो।
छुत के भूत के दूर करोगे तो, बिगड़ो काम बनेगों तम्हारो॥

(सवैया)

८. सत्य कूं जानो सत्य कूं पानों, कोन्सि करों सत्यसंगों।
साँच ज्ञान की बात सुणों फिर, कबहु न होंवै व्रत भगां॥
सवठन एक बनाकर राखो, एक सिद्धान्त रखो जो चारा।
दोष बिना जो तुम्हें सतावै, ताते मिलकर लेहु दगां॥

(सवैया)

९. सगठन शक्ति का भोज करो, तायें अपनो धाति को बुलाओ।
एक माता में बालक पन ने, सगठन शक्ति का भौग लगाओ॥
जिननी शक्ति जो फूट गई है, तांकू धीरे-धीरे अपने मैं लाओ।
मोती कहै यही पति से प्यारे, संगठन शक्ति को करके दिखाओ॥

(सवैया)

१०. छुत के भूत से हानी भई अति, काहु कहु कुछ कहत न आवे ।
अपने हूत सो गैर बने अरु, एक के हाथ को एक न खावे ॥
जङ्ग में एक टिके नहीं सम्मुख, भुत के भूत कू देख डरावे ।
छुत की फूटते छीन लिये घर, मोती कहां तक ताहि सुनावे ॥

(सवैया)

११. फूटते कैसी लुट परी लुट लिये अब भाई तुम्हारे ।
छुआ-छुत किया दिल अपने, बिगड़ गये सब कर्ज तुम्हारे ॥
सोचत हो अब बैठ मन में, कैसी भई ऐ राम हमारे ।
मोति कहै अब भई सो भई, पर अब हू सोच करो बल मारे ॥

बन्धुओं क्यों इन मिथ्या बातों को मान कर जाति में भेद भाव करके तुम शक्ति हीन बनते हो ? समय की पहिचान करो। जिस समय प्राचीन ऋषिओ ने वर्ण व्यवस्था वाको थी वह समय क्या था ? और अब क्या समय है ? इस समय संगठन शक्ति का है और संगठन ही होना उचित है किया कि संगठन से ही एक वेद, पुराण, बाबिल, इतिहास ही बन्ते हैं इसी का नाम सँगठन शक्ति है।

जाति ज्जननी माँ

तेरे हृदय की स्नेह में न जाने कितने तेर गये। तेरी छाती के अमृत ने न जाने कितने को अमर बनाया है तेरे नेत्रों की ज्योति से न जाने कितने को प्रकाश मिला है। तेरी भौहों के सचालन से इतिहासों के न जाने कितने पन्ने लिखे गये हैं। तेरी गोद में अर्क कबसे जन्म ले रहे हैं। कब से पल रहे हैं। और कब

से नष्ट हो रहे हैं। दुःख में आतंक में प्रसन्नता में जन्म में मृत्यु में सदा तेरी शीतल गोद में। दौड़ कर छिप जाने को प्राणी लालायित हैं। कभी कन्या के रूप में कभी नारी के रूप में और कभी माता के रूप में तू सदा रही और सदा रहेगी। तेरे बिना कुछ नहीं हो सकता। मां आज यह महीमा लोग क्या भूल गये हैं। तुतो अनादि काल से ज्यो को त्यों अपने कर्त्तव्य में स्थित है। आँधो हो तुफान हो धूप हो बादल हो सुःख हो या दुःख हो फिर क्यों ऐसा हो गया मां छल कपट की क्या कृपा है ?

[ओ३म्]

श्री अर्क वंशीय क्षत्रिय सभा, मेरठ छावनी कार्यकर्त्ताओं तथा सदस्यों की सूची।

सज्जनों !

अब मैं आपका ध्यान उस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि जिस प्रकार से हमारी सभा का संचालन कार्य ाइा भला प्रकार निममित रूप से होता है। सभा का कार्य कार्यकर्त्ताओं द्वारा न्यायोचित ढंग किया जाता है जैसा की हमारी सनातन रीति से होना आया है। वैदिक युग में हिन्दु समाज 'जनो' में विभाजित था, जिसकी एक समिति या सभा होती थी जिसके द्वारा जनमत का प्रकाशन किया जाता था। और इस समिति या सभा का निर्वाचन जनमत के अनुसार होता था; जो कि वैज्ञानिक रूप से प्रमुख संस्थाएं समझी जाती थीं और उनके द्वारा जो निर्णय किया जाता था। वह सर्वमानय होता था। कार्य कर्त्ता गण प्रत्येक कार्य में काम तथा धर्म का सदैव ध्यान रखते थे। इसी प्रकार हमारी यह सभा

"जाति सेवा भगवान की सेवा है"

—मूलचन्द सिंह अर्क

अपने पन्थ पर नियमित रूप से चल रही है। हमारे नेता श्री बाबू मूलचन्द सिंह जी ने यह कार्य भार अपने कन्धों पर लेकर जाति की और उचित ढंग से चलाने की व्यवस्था करदी। और इस प्रकार मन्त्री मण्डल का निर्वाचन हुआ।

प्रथम निर्वाचित कार्यकारिणी समिति १९४८ ई०

नाम	पिता का नाम	निवासी
श्री मूलचन्द सिंह प्रधान	किशनसिंह	मेरठ
श्री देवीसिंह उप प्रधान	बख्तावरसिंह	बिलग्राम
श्री गैजूसिंह मंत्री	;;	”
श्री साहूसिंह उप-मंत्री		अम्बाला
श्री खेमकरनसिंह कोषाध्यक्ष	तेजासिंह	खभोली
श्री मन्नासिंह मेम्बार	मुरलीसिंह	चकनन्दपुर हरदोई
श्री पुन्तूसिंह मेम्बार	दुर्गासिंह	मेरठ
श्री मुरारीलालसिंह मेम्बार	बिहारीसिंह	मेरठ
श्री लखपतसिंह मेम्बार	चतुरीसिंह	मेरठ
श्री छोटेलाल ”	खेम्मानसिंह	देवी पुरवा
श्री गंगा सिंह ”	मैकसिंह	कन्नौज

दूसरी निर्वाचित कार्य कारणी समिति १९५२ ई०

नाम	पिता का नाम	निवासी
श्री मूलचन्दसिंह प्रधान	किशनसिंह	मेरठ
श्री मोतीसिंह उप-प्रधान	दुर्गासिंह	मल्लावां हरदोई
श्री गैजूसिंह मंत्री	बख्तावरसिंह	बिलग्राम
श्री प्रसादीसिंह उप० मंत्री	किलोलसिंह	मेरठ
श्री मूलचन्दसिंह कोषाध्यक्ष	पोखईसिंह	मेरठ
श्री रामरतनसिंह मम्बेर	मूरलीसिंह	चकनन्दपुर हरदोई

श्री पुत्तू सिंह	मम्बेर	दुर्गासिंह	मेरठ
श्री मगलीसिंह	,,	जुराखनसिंह	चकनन्दक
श्री विटारीसिंह	,,	बल्लासिंह	भलवल हरदोई
श्री घनवारीसिंह	,,	घासीसिंह	मेरठ
श्री कन्हीसिंह	,,	छेदासिंह	मेरठ

तीसरी निर्वाचन कार्य कारिणी १९५७ ई०

नाम	पिता का नाम	निवासी
श्री मूलचन्दसिंह प्रधान	किशनसिंह	मेरठ
श्री मोतीसिंह उप० प्रधान	दूर्गासिंह	मल्लावा हरदोई
श्री भईया लालसिंह मंत्री	जुराखनसिंह	चकनन्दपुर
श्री प्रसादीसिंह उप मंत्री	किलोल सिंह	मेरट
श्री ओमप्रकाशसिंह कोषाध्यक्ष	मत्थूरीसिंह	मेरठ
श्री राम रतनसिंह सम्मेवर	मूरलीसिंह	चकनन्दपुर हरदोई
श्री पुत्तू सिंह ,,	दूर्गासिंह	मेरठ
श्री विहारीसिंह ,,	बल्लासिंह	भडवल हरदोई
श्री छोटेलालसिंह ,,	खेम्पानसिंह	देनी पुरवा
श्री कान्हासिंह ,,	छेदासिंह	मेरठ
श्री नन्हेसिंह ,,	छेदासिंह	मेरठ

चौथी निर्वाचित कार्य कारणी समिति १९५८ ई०

नाम	नाम पिता का	निबासी
श्री मूलचन्दसिंह प्रधान	किशनसिंह	मेरठ
श्री प्रसादीसिंह उप-प्रधान	किलोलसिंह	मेरठ
श्री भारतसिंह मंत्री	दरयसिंह	मेरठ
श्री विहारीसिंह उप-मंत्री	बल्लासिंह	भडवल हरदोई

ठा० नाम	पिता का नाम	निवासी
श्री ओमप्रकाश कोषाध्यक्ष	मथुरीसिंह	मेरठ
श्री प्रेमचन्द मेम्बेर	किशनसिंह	मेरठ
श्री गोविन्दसिंह मेम्बेतर	कन्हीसिंह	मेरठ
श्री महावीरसिंह मेम्बेर	घासीसिंह	मेरठ
श्री पञ्चमसिंह मेम्बेशार	जुरखानसिंह	मेरठ
श्री खेमकरनसिंह मेम्बेर	तेजासिंह	सम्भौली हरदोई
श्री बेचेसिंह मेम्बेर	जुराखनसिंह	कचौली हरदोई

सभ के प्रमुख सहायकगण तथा जनरल बडी

ठा० नाम	नाम पिता का	निवासी
" देवोसिंह	बख्तावरसिंह	बिलग्राम
" छोटेसिंह	खेम्मनसिंह	देवी पुरवा
" मुरारीसिंह	बिहारीसिंह	मेरठ
" लखपतसिंह	चतुरीसिंह	"
" गनासिंह	मैकुसिंह	कन्नौज
" नत्थासिंह	पैकुसिंह	"
" शिवरतनसिंह	दुर्गासिंह	मललावां
" हरीचन्दसिंह	मेंघईसिंह	"
" सुन्दरसिंह	उमरावोंसिंह	"
" बलदेवसिंह	लीलासिंह	मेरठ
" पूरनसिंह	मैकूसिंह	माधोगंज
" चेतरामसिंह	घुरईसिंह	खेराना पुरवाओ
" मथुरीसिंह	रामदीनसिंह	सेलापुर
" मूलचन्दसिंह	जियालालसिंह	मुस्तफाबाद
" कन्हईसिंह	खग्गासिंह	चकनन्दपुर

ठा० नाम	पिता का नाम	निवासी
" रामचन्द्रसिंह	गयादीनसिंह	मेरठ
" घूरेसिंह	टीकासिंह	मललावां
" किलोलसिंह	लोकईसिंह	चकनन्दपुर
" रामलालसिंह	भिखारीसिंह	कोसिया
" चिरंजीसिंह	खेम्मनसिंह	देबी पुरवा
" अजोद्धीसिंह	भिखारीसिंह	रवरी
" वेचेसिंह	जुराखनसिंह	कैथोली
" नन्हईसिंह	सीताराम	मझिया
" सीताराम	पंचम	कासीराम खेरा
" मूलचन्द्रसिंह	बल्लासिंह	मवईया
" मूलचन्द्रसिंह	जाधासिंह	कैथोली
" गोपीसिंह	रामचरनसिंह	मेरठ
" ललतुसिंह	दुर्गासिंह	मेरठ
" किशनलाल	अवतारसिंह	"
" मुन्नीलाल	अवतारसिंह	"
" गोपालसिंह	जुराखनसिंह	कैथोली
" जियालाल	बदलसिंह	चकनन्दपुर
" कन्हीईसिंह	बेचेसिंह	पुरतकाबाद
" मेंकूसिंह	बसदेवसिंह	कांइस
" रामप्रसाद	चन्दनसिंह	मल्लावां
" चतुरीसिंह	मौनीसिंह	सुलतानपुर
" दुलारेसिंह	घूरेसिंह	मेरठ
" चुन्नीलाल	नेतासिंह	मेरठ
" नारायण	नन्दासिंह	"
" कन्हीसिंह	जुराखनसिंह	कैथोली

	नाम	पिता का नाम	निवासी
ठा०	ननहेसिंह	भिखारीसिंह	मल्लावां
"	शम्भूसिंह	नन्हूसिंह	मेरठ
"	जमुना प्रसाद	जियालाल	चकनन्दपुर
"	गयाप्रसाद	किशोरीसिंह	मेरठ
"	भैय्योलाल	जुराखनसिंह	चकनन्दपुर
"	चन्द्रिकाप्रसाद	कुवांरसिंह	नरौना
"	जगनाथसिंह	कालिकासिंह	मेरठ
"	ओ३मप्रकाश	पत्थुरीसिंह	सोलापुर
"	छेदीसिंह	जुराखनसिंह	चकनन्दपुर
"	रामस्वरूप	बलदेवसिंह	मेरठ
"	जीवनसिंह	कन्हीसिंह	"
"	बाबूलाल	कालीकासिंह	मललावां
"	महावीरसिंह	बद्रीप्रसाद	मेरठ
"	कन्हीसिंह	दरियाओसिंह	मेरठ
"	छोटेसिंह	शिवचरनसिंह	"
"	राम भरोसेसिंह	शिवचरनसिंह	"
"	चेतराम		मललावाँ
"	नेक्कासिंह	अवतारसिंह	मेरठ
"	गोपालसिंह		
"	तुलसी भगत		रबरी
"	नरयानसिंह	भिखारीसिंह	चकनन्दपुर
"	रामरतनसिंह	मुरलीसिंह	मेरठ
"	नारायनसिंह	दुर्गासिंह	मेंलेगोला
"	छोटेसिंह	कन्हीसिंह	मलेगोला
"	रामलाल	कन्हीसिंह	

ठा०	नाम	पिता का नाम	निवासी
,,	उजागरसिंह		
,,	रामप्रसाद	मुरलीसिंह	मल्लावां
,,	गोकुलसिंह		चितवम
,,	किशनसिंह		टैनीस
,,	ऊद्द सिंह	केदारसिंह	अम्बाला
,,	श्यामलाल		चकन्दनदपुर
,,	सोनेसिंह		मुरतकाबाद
,,	मगलीसिंह	जुराखनसिंह	चकनन्दपुर
,,	कन्हीसिंह		बिराहिमपुर
,,	सकेटसिंह	मुल्लासिंह	कैथोली
,,	बाबूलाल	प्रसराम	अम्बाला
,,	कल्लूसिंह	कुशलसिंह	मेरठ
,,	श्यामलाल	आगनसिंह	चकनन्दपुर
,,	माधोसिंह	नत्थूसिंह	मेरठ
,,	हरीचन्द	गनेशसिंह	काजीपुर

यज्ञोपवीत की तीन लड़ियाँ

यज्ञोपवीत में तीन लड़े हमारे लिये तीन महान संकेत करती है पुस्तकें मुख्य होती है पर उनके गर्भ में विचारों का भारी भण्डार जमा रहता रहता है। मूर्तिया, प्रतिमाएं, तस्वीरे, समाधियां, स्मारक, ऐतिहासिक भूमिया यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से मौन होती है, निष्प्राण होने के कारण वे अपनी कोई बात किसी से कुछ नहीं कह सकती तो भी विचारवान व्यक्ति जानते हैं कि उनमें कितने भारी संदेश भरे होते हैं और यह निर्जीव पदार्थ मानव अन्तः कारण पर अपना छाप इतिना डालते है जितनी को कोई सजीव प्राणी भी कठिनाई से डाल पाता है है।

यज्ञोपवीत भी एक ऐसा ही मूक व्याख्याता गुरु है जो प्रतिक्षण हमारे साथ रहता है और हर घड़ी बड़े-बड़े महत्व पूर्ण उपदेश देता रहता है। उसमें तीन लड़े हैं यह विश्वव्यापी तीन कर्तव्यों की ओर सदैव हमारा ध्यान आकर्षित करती है और बताती है कि आदेश जीवन एक प्रकार का त्रिकोण है। इसमें तीन प्रकार संतुलन रखने से ही सुन्दरता रहेगी यदि यह संतुलन बिगड़ जाता है तो यह त्रिकोण बड़ा भद्दा टेढा मेडा कुरूप हो जायगा। इस लिये यज्ञोपवित की तीन लड़े हमें उन तीन तथ्यों की ओर हर घड़ी याद दिलाती है जिनके ऊपर जीवन सौंदर्य का सारा आधार रखा हुआ है। आगे अब उन महत्व पूर्ण त्रिकोणों की चर्चा की जाती है।

(१) कधें पर तीन ऋण:—

हर मनुष्य के ऊपर तीन ऋण होते हैं।

(१) देव ऋण (२) ऋषि ऋण (३) पितृ ऋण

इन तीनों से उऋण होना हमारा कर्तव्य है।

(१) देव ऋण:-उन्हें कहते है जो देते हैं। संसार की जीवित और स्वर्गस्थ अनेक आत्माओं ने मनुष्य जाति का दिव्य प्रकाश दिया है, अपने आपको कष्टो में डाल कर दुसरो को दिव्य मार्ग पर ले जाने के लिये उन्होंने अपनी समस्त शक्तियों को निछावर किया है ऐसे आदिशवादी, लोकसेवा महापुरुषों ने अपने आप को होमकर यदि सत्पथ का उदाहरण ने रखा होता तो केवल कथन मात्र से, उपदेश मात्र से जन साधारण को उत्तम मार्ग पर नालने के लिये प्रेरणा न मिलती देवं पुरुष इस विश्व की श्रेष्टतम संपत्ति है। उनकी परम्पार को यथा संभव हमें भी कायम रखना चाहिये। जितना बन पड़े उतना प्रयत्न करना चाहिये कि हमारे कार्य भी अधिक मात्र में दिव्य हों।

(२) ऋषि ऋण:—यह है जो उत्तम विचार धारा का निर्माण और प्रकाश करते हैं। देवता और ऋषियों में अन्तर यही है कि ऋषियों का कार्य अधिकांश में लोगों के मस्तिष्क में अनेक तर्क और तथ्यों द्वारा सद्ज्ञान का आरोपण करना होता है। वे जानते है कि पहला काम मनोभूमियों को जीत कर उर्वरी बनाना है, ऐसी भूमि में ही दिव्यत्व के बीज जम सकते है और सत्योंयी के पौदे उग कर फल फूल सकते हैं। जिनकी मनोभूमि ऊसर है उसमें किसी अच्छे अनुकरण की भी इच्छा नहीं होती। इस लिये वे विचारों का निर्माण करते हैं ताकि उपयुक्त मनोभूमि में समय पाकर अच्छे बीज जम सके ऋषि हलवारा है और देवता बीज बोने वाला। वैसे दोनो ही एक ही कृषि कार्य को अपनी-अपनी मर्यादा में करते है। ऋषि ऋण से उऋण होने के लिये यह अवश्यक है कि हम अपने विचारों का परिमार्जन करें।

(३) पितृ ऋण:—कहते है पूर्वजों को। हमारी पहली पीढ़िया अब प्रकार शानदार थी उनका गौरव संसार भर में सुविख्यात था, क्या हम उनकी गौरव गरिम्पा को डुबादेंगे ? हम इतने तुच्छ क्षुद्र नीच, अकर्मण्य बनकर यह कहलाते हुए लज्जा अनुभव न करेंगे कि हम उन ऋषियों योद्धाओं और महापुरुषों की कैसी कुपुत्र सताने है ? हमारे पुर्वज अपनी उज्जवल कीर्ति की रक्षा करना अपना परम पवित्र कर्तव्य है। इस कर्तव्य पालन किये बिना उस महान् पित ऋण से उऋण नहीं हुआ।

इस प्रकार देव ऋण, ऋषि ऋण और पित्-ऋण से छुटकारा पाकर मुक्ति लाभ करने का संदेश यज्ञोपवित हमें देता है वह कहता है कि जब तक इन तीन बंधनों से ऋणों से छुटकारा नहीं

पाएँगे तब तक बन्धन में ही बधें रहोंगे। कर्ज चुकाने वाला ही
छुटकारा पा सकता है वही मुक्ति का अधिकारी है।

भारतीय संस्कृति बीजमंत्र पेज १८

यज्ञार्पायित

स्वर्गीय पुरुषों की श्रद्धांजली

इस शास्त्र-श्यामता भारत वसुन्धरा पर युग-युग से महान
आत्मायें पथ भ्रष्ट पथिकों को अपनी पियूष वाणि तथा आचरण से
पथ प्रदर्शन करने के लिये जन्म लेती रही है उन्हीं की
अमृत वाणी से तथा सत्कर्मों से आज भी यह धरा अपना गर्व से
सिर ऊंचा किये हुये खड़ी है अपने कर्तव्य तथा अपनी प्राचीन
परम्परा से विमुख तथा भ्रष्ट गामी को ऐसी आत्मायें उनको पंथाव
लोकन कराके अपनी आत्मिक ज्योति से उन्हें अपने भूले हुये
कर्तव्यों का पुनरावलोकन करा कर उनको सत्य मार्ग का प्रदर्शन
कराती रही है उन्हीं आत्माओं में से अपने समयनुकूल एक
आत्मा "बाबा गरीब दास जी" इस पवन भूमि पर अवतरित हुये

यह बचपन से ही बड़े कर्मठ तथा सत्य धर्मी थे शुरू से ही
उनका जी ईश्वराधना की ओर खिंचता गया धीरे धीरे इनका
जीवन व्यतीत होता गया परन्तु अपने जीवन में इन्होंने कभी भी
कुटिलता या तुच्छ विचारों को न आने दिया बहुत दिनों तक
की सेवा करने के उपरान्त उनकी यह अभिलाशा हुई कि वह
अपना एक आश्रम बना कर स्वंय जन सेवा का भार अपने ऊपर
लें परन्तु गुरू महाराज की कृपा उन्हें प्राप्त हुई और उन्होंने
अपना आश्रम रसूलापुर ग्राम जिला सीतापुर अपने निवास स्थान
पर ही स्थापित किया।

इन दिनों में उन्हें एक ऐसी दुर्घटना का आभास हुआ जिससे उनके दिल को एक बहुत बड़ी क्षति पहुँची उन्होंने देखा कि हमारे भाई वही अपनी प्राचीन अवस्था से कितने पतित हो चुके हैं वह अपने कर्तव्य को कितना भूल चुके हैं उन्हें किसी भी प्रकार यह सहन न हुआ और कटिबद्ध होकर जाति सेवा संग्राम में कूद पड़े अपने इन सोते हुये अर्क वीरों को अपनी आत्मा ज्योति से जगाया और उन्हें अपने भूले हुये कर्तव्य पर आरूढ़ कराया आपने अपनी कर्मठता का पाठ पढ़ा कर वास्तव में हमारे जाति भाइयों के अन्दर एक स्फूर्ती भर दी है।

इन्हीं दिनों में जब हमारे पूज्य बाबा गरीब दास जी जाति सेवा में तल्लीन थे उन्हें ने एक ऐसी विभूति का सहारा मिला जिससे हमारी जाति में और भी चार चाँद लग गये वह थे हमारे पूज्य जिला हरदोई निवासी महान श्री लालता दास जी जिनकी कृपा से हमारी जाति को एक और सहारा मिल गया दोनों विभूतियों के एक विचार तथा एक लक्ष्य को पाकर हमारी जाति में एक उत्साह की लहर दौड़ गई अब दोनों आत्माओं के सम्मेलन से उन के अन्दर जाति सेवा का बँधा हुआ बांध टूट पड़ा और देश विदेश तीर्थादि पर्यटन करने निकल पड़े।

श्री गणेश शायनमः बाबा गरीबदास जी का जन्म सन १६१४ ई० में हुआ था। उनकी माता का नाम रामकली और पिता का नाम रामचरणसिंह था यह जिला सीतापुर स्थान रसूलपुर के रहने वाले थे यह बचपन से ही बहुत सरल सुभावके थे और जाति प्रेम पर मर मिटना इनका सच्चा धर्म था और सन् १६३२ ई० में बाबा रामदास जी स्थान कुटी बेनियापुर जो रसूलापुर के निकट पच्छिम में एक मील पर है उनके दो शिष्य होगये बाबा गरीबदास जी बचपन से विरक्त थे परन्तु गुरु मंत्र लेकर तीर्थ तथा जाति

देश पर्यटन करने लगे थे तो बाबा जी को गुरु जी चाहते थे कि घर पर रहे और पूजा पाठ करें परन्तु बाबा गरीबदास जी यह पसन्द नहीं करते थे उनका जाति प्रेम बहुत था और जाति सेवा करते करते सन् ४७ ई० में ४२ साल की आयु होकर जिला सीधी ग्राम अल्लीपुर गोलागोकनाथ के निकट दुनियां से कूच किया बाबा गरीबदास के तीन भाई दुलारेसिंह व कन्धाईसिंह व द्वारकादाससिंह और छेदासिंह जाति प्रेमी अब भी रसूलपुर में रहते हैं जो जाति पर मर मिटने वाले हैं।

[पोंठ सेलूमाऊ]

इसी मुमशाकाल में उन्हें अपने मेरठ निवासी श्री स्वर्गीय बाबू नत्थूलाल अर्क मूलचन्द सिंह अर्क जी की क्षत्रिय वंसावली पढ़ी तब से अपने मेरठ निवासी भाईयां का पता चला अतः मंडल तथा जिले का भ्रमण किया तब अपनी महान कृपा तथा पियुष वाणी का रसस्वादन कराने तथा सोये हुये अर्क वीरों को जगाने यह पधारे मेरठ निवासी भाइयों ने उन विभूतियों को पाकर अपने भुलाये हुये कर्त्तव्यों को सींचा और ईस्वर से उनके अन्दर जाति सेवा का प्रेम वतमान रहने की प्रार्थना की आज जो भी उन्होंने हमारी जाति की सेवा की है वह हमारे लिये पूज्य होते हुये भी हमारे नव जात भाईयों के लिये महान पथ प्रदर्शक है धन्य है उस आत्मा को जिसने हमें विनाश के गर्त में गिरने से बचाया और हमारे कर्तव्यों को दिखा कर हमें अपना पथ दिखाया यद्यपि आज हमारे पूज्य बाबा गरीब दास जी इस संसार में नहीं हैं परन्तु फिर भी उनकी सुकृति से, उनकी कृपा का अर्क क्षत्रिय समाज सदैव ऋणी रहेगा।

आदरणीय स्वर्गीय राधेश्याम शर्मा मेरठ निवासी जाति गुरु एवं कुल पिरोहित के अकाल देशावसान पर प्रस्तुत सेवेदन-पत्र।

प्रातस्मरणीय एवं आदरणीय गुरुदेव !

वैसाख सुदी पूर्णिमा सम्वत् २०१४ तद्नुसार तिथि ४ अप्रैल
१६५८ दिन शुक्रवार के मध्याह्न १:३० बजे हमने आपके आक-
स्मिक देहावसान से कितनी पीडा सही है, यह अकथनीय है।

श्रद्धेय

आप हमारा पथ-प्रदर्शन दीर्घकाल से करते आ रहे थे।
सभी प्रकार के क्रिया कलापों में आप हमारे साथे हाथ बन चुके
थे। ग्रन्थों में प्रतिपादित सभी प्रकार के धार्मिक संस्कारों की
रीतियों को समय समय पर करा कर सांसारिक माया जाल के
कुपथ से हटाकर भगवद्भक्ति के सुपथ पर जाने के मार्ग का जीवन
की पुष्पाञ्जलि करते रहे आपके ये सत्कार्य हमें सदैव स्मरणीय
रहेंगे।

हम अत्यन्त विनय, सम्मान आदर तथा श्रद्धा के साथ
आपके पुण्य चरणों में नतमस्तक होकर बार बार आपको
अपनी श्रद्धाजली अर्पित करते है। आपको महान तपस्या
और महान साधना का ही यह परिणाम है। कि पंचम काल
में भी धर्म की भावना सब ओर जागृत हो। आप सरीखे
महान गुरुओं तथा तपस्वीओं को पाकर आज का अर्क क्षत्रिय
समाज धन्य हो गया है। आपके तपो मय, त्यागमय, परम
पावन चरित्र और निष्कलंक, निस्पृह एव निर्मल पवित्र जीवन
से कितने ही मानव प्राणियों का उद्धार हुआ है। संसारी व्य-
सनों में फंसे हुऐ कितने ही मानवों को उससे प्रकाश मिला
है। आपने ब्रह्मचर्य का बृत लेकर अपने को ही नही वरन
समाज को भी कृतार्थ किया है। समाज आपके धर्मोपदेश
से प्रभावित होकर बुरे आदि का परित्याग किया है। नयी
प्रेरणा नयी स्फूर्ति, नयी चेतना तथा नये जीवन का नया सन्-

मैं बहुत बहुत आभार व्यक्त करता हूं हमारे आदरणीय दादा श्री मोती सिंह इक्ष्वाकु 'इक्ष्वाक' जी को जिन्होंने हमारे समाज को एक नई राह दिखाई। हमारे समाज की धरोहर हमारे गौरवशाली इतिहास के बारे मे सप्रमाणित विस्तृत जानकारी अर्क क्षत्रिय प्रकाश नामक पुस्तक के द्वारा हम सभी तक पहुंचाई। हमने इस पुस्तक को पीडीएफ के माध्यम से आप सभी तक पहुंचाने का एक छोटा सा प्रयास किया है।

अपने क्षत्रिय समाज से जुडी हुई प्रत्येक वीडियो देखने के लिए हमारे यूट्यूब चैनल History Of Kshatriya King Suryavanshi पर जाकर अपने क्षत्रिय समाज से जुडी हुई समस्त वीडियो को देख सकते है। सोशल मीडिया के लिंक लीचे दिए गए है।

आप सभी को बहुत बहुत धन्यवाद
एवं हृदय से आभार।

एस. के. सिंह सूर्यवंशी

अर्क क्षत्रिय प्रकाश

सूर्यवंशी अर्क क्षत्रिय

पीडीएफ निर्माता
एस.के. सिंह सूर्यवंशी
8176806841
mrsksingh23@gmail.com

पुस्तक प्रकाशन
सन 1959

लेखक
श्री मोती सिंह इक्ष्वाकु (इक्ष्वाक)